विवेक शर्मा
प्राक् शास्त्री-प्रथमवर्ष
अनुक्रमाँक -३८

PART-1

VIVEK SHARMA.

श्रायद

स संज्ञाप्रकरणं

नत्वा सरस्वतीं देवीं शुद्धां गुण्यां करोम्यहं
पाणिनीयप्रवेशाय लघु सिद्धान्तकौमुदीम् ॥१॥

चौदह शिव सूत्र →

अ इ उण् १। ऋ लृक् २। ए ओङ् ३। ऐ औच् ४।
हयवरट् ५। लण् ६। ञ म ङ ण नम् ७। झ भञ् ८।
घ ढ धष् ९। जबगडदश् १०। ख फ छ ठ थ च
ट तव् ११। क पय् १२। शषसर् १३। हल् १४।

श्लोक का अनुवाद → मैं (वरदराज) शुद्ध
तथा प्रशस्त गुणों से युक्त सरस्वती
देवी को नमस्कार करके पाणिनीय व्याकरण
शास्त्र मे प्रवेश के लिए लघु सिद्धान्तकौमुदी
को बनाता हूँ।

सूत्र →

१. हलन्त्यम् → उपदेश अवस्था मे ~~अन्तिम~~
अन्त्य हल् की इत्संज्ञा होती है।

२ अदर्शनं लोपः → विद्यमान के अदर्शन की लोप संज्ञा होती है।

३ तस्य लोपः → जिसकी इत्संज्ञा होती है, उसका लोप होता है।

४ आदिरन्त्येन सहेता → अन्त्य इत् के साथ उच्चार्यमाण आदि वर्ण मध्यगामी वर्णों का तथा अपना बोधक होता है।

५ ऊकालोऽज्झ्रस्व-दीर्घ-प्लुतः → एकमात्रिक द्विमात्रिक त्रिमात्रिक उकार के उच्चारण काल के समान है उच्चारणकाल जिस अच् का वह अच् क्रम से ह्रस्व-दीर्घ-प्लुत संज्ञक होता है।

६ उच्चैरुदात्तः → तालु आदि सभाग स्थानों के ऊर्ध्वभाग में निष्पन्न अच् उदात्त संज्ञक होता है।

७ नीचैरनुदात्तः → तालु आदि सभाग स्थानों के अधोभाग में उच्चार्यमाण अच् अनुदात्त संज्ञक होता है।

८ समाहारः स्वरितः → मध्य भाग में उच्चार्यमाण अच् स्वरित संज्ञक होता है।

९ मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः → मुख सहित नासिका से उच्चार्यमाण वर्ण अनुनासिक संज्ञक होता है।

१० तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम् → तालु आदि स्थान और आभ्यन्तर प्रयत्न जिन वर्णों के तुल्य हों उनकी परस्पर सवर्ण संज्ञा होती है (ऋ और लृ वर्ण की परस्पर सवर्ण संज्ञा कहनी चाहिए)।

११ अणुदित् सवर्णस्य चाऽप्रत्ययः → विधान किये जाने वाले को प्रत्यय कहते हैं

१२ परः सन्निकर्षः संहिता → वर्णों के अतिशय सामिप्य को संहिता कहते हैं।

१३ हलोऽनन्तराः संयोगः → अचों के व्यवधान से रहित हल् संयोग संज्ञा होते हैं।

१४ सुप्तिङन्तं पदम् → सुबन्त और तिङन्त की पद संज्ञा होती है।

	ह्रस्व	दीर्घ	प्लुत
1	ह्रस्व उदात्तानुनासिकः	दीर्घ उदात्तानुनासिकः	प्लुत उदात्तानुनासिकः
2	ह्रस्व उदात्ताननुनासिकः	दीर्घ उदात्ताननुनासिकः	प्लुत उदात्ताननुनासिकः
3	ह्रस्व अनुदात्तानुनासिकः	दीर्घ अनुदात्तानुनासिकः	प्लुत अनुदात्तानुनासिकः
4	ह्रस्व अनुदात्ताननुनासिकः	दीर्घ अनुदात्ताननुनासिकः	प्लुत अनुदात्ताननुनासिकः
5	ह्रस्व स्वरितानुनासिकः	दीर्घ स्वरितानुनासिकः	प्लुत स्वरितानुनासिकः
6	ह्रस्व स्वरिताननुनासिकः	दीर्घ स्वरिताननुनासिकः	प्लुत स्वरिताननुनासिकः

आभ्यन्तर प्रयत्न

स्पृष्टम्	ईषत्स्पृष्टम्	विवृतम्	ईषद्विवृतं	संवृतम्
क च ट त प	य	अ ए	श	ह्रस्वः
ख छ ठ थ फ	र	इ ओ	स	'अ'
ग ज ड द ब	ल	उ ऐ	ष	प्रयोगे
घ झ ढ ध भ	व	ऋ औ	ह	
ङ ञ ण न म		लृ		

बाह्यप्रयत्न

विवारः श्वास, अघोषः	संवारः, नादः, घोषः	अल्पप्राणः	महाप्राणः	उदात्तः अनुदात्तः, स्वरितः
		क ग ङ य अ ऌ	ख घ श	
क ख श	ग घ ङ य	च ज ञ व इ ए	छ झ ष	
च छ ष	ज झ ञ व	ट ड ण र उ ओ	ठ ढ स	अ ए
ट ठ स	ड ढ ण र	त द न ल ऋ ऐ	थ ध ह	इ ओ
त थ	द ध न ल	प ब म औ	फ भ	उ ऐ
प फ	ब भ म ह			ऋ औ
				ऌ

अथ अच् सन्धिप्रकरणम्

१५ इको यणचि → इक् के स्थान में यण् होता है अच् परे होने पर संहिता के विषय में।

१६ तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य → सप्तमीनिर्देश (सूत्रों में सप्तम्यन्त पद) से विधीयमान कार्य, वर्णान्तर के व्यवधान से रहित पूर्व को होता है।

१७ स्थानेऽन्तरतमः → प्रसङ्ग होने पर सदृशतम आदेश होता है।

१८ अनचि च → अच् से परे यर् को विकल्प से द्वित्व होता है; अच् परे रहते नही होता।

१९ झलाँ जश् झशि → झलों के स्थान में जश् होते हैं; झश् परे रहते।

२० संयोगान्तस्य लोपः → संयोगान्त पद का लोप होता है।

२१ अलोऽन्त्यस्य → षष्ठी निर्दिष्ट (सूत्रों में षष्ठ्यन्त पद के द्वारा बताए गए) अन्त्य अल् का आदेश होता है (वा० संयोगान्त

यण् के लोप का प्रतिषेध कहना चाहिए।)

एचोऽयवायावः → एचों को क्रम से अय्,
22 अव्, आय्, आव्, आदेश होते हैं अच् परे
रहते।

यथासंख्यमनुदेशः समानाम् → सम
23 सम्बंधी विधि (कार्य) यथासङ्ख्यता से
(क्रम से) होती है।

वान्तो यि प्रत्यये (अध्वपरिमाणे च) → यकार
24 है आदि में जिसके ऐसा प्रत्यय परे हो
तो ओ और औ को अव्, आव् आदेश
होता हैं। (वा० गो शब्द को वान्त अव् आदेश
होता हैं यूति शब्द परे रहते यदि मार्ग
का परिमाण बताना हो।

अदेङ् गुणः → अत् और एङ् की गुण
25 संज्ञा होती है।

तपरस्तत्कालस्य → तकार से परे जो अच्,
26 वह उच्चार्यमाण समानकाल का ही बोधक
होता है अर्थात् ह्रस्व के साथ 'त्' हो तो

ह्रस्व का बोध करायेगा अर दीर्घ एवं प्लुत के साथ होगा तो दीर्घ एवं प्लुत का।

२७ आद्गुणः → अवर्ण से अच् परे रहते पूर्व के स्थान में गुणरूप एक आदेश होता है।

२८ उपदेशेऽजनुनासिक इत् → उपदेश में अनुनासिक अच् की इत्संज्ञा होती है।

२९ उरण् रपरः → तीस प्रकार के 'ऋ' के स्थान में होनेवाला अण् रपर होकर प्रवृत्त होता है।

३० लोपः शाकल्यस्य → अवर्णपूर्व पदान्त यकार वकार का विकल्प से लोप होता है अश् परे रहते।

३१ पूर्वत्रासिद्धम् → सपाद सप्ताध्यायीस्थ (सवा सात अध्यायों) के सूत्रों कि दृष्टि में त्रिपादीस्थ (आठवे अध्याय के तीन पदों के) सूत्र असिद्ध होते हैं और त्रिपादियों में भी पूर्व सूत्र के प्रति पर सूत्र असिद्ध होता है।

यण संधि →

सुद्ध्‌युपास्यः अथवा सुध्युपास्यः

सूत्र	कार्य	स्थिती
इको यणचि		सुधी + उपास्यः
तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य	इन दो सूत्रों की	सुध्य् + उपास्यः
स्थानेऽन्तरतमः	सहायता से	
अनचि च	विकल्प से 'ध्' को द्वित्व	सुध्ध्य् + उपास्यः
झलां जश् झशि	'ध्' को 'द्'	सुद्ध्य् + उपास्यः
संयोगान्तस्य लोपः	'य्' को लोप प्राप्त	सुद्ध्य् + उपास्यः
यणः प्रतिषेधो वाच्यः	'य्' को लोप निषेध	सुद्ध्य् + उपास्यः
		इति रूप सिद्धं - सुद्ध्‌युपास्य

द्वित्व के अभाव पक्ष में - सुध्युपास्यः ।

मद्ध्वरिः, मध्वरिः

सूत्र	कार्य	स्थिति
इको यणचि		मधु + अरिः
तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य	इन दो सूत्रों कि	मध्व् + अरिः
स्थानेऽन्तरतमः	सहायता से	

स्थानेऽन्तरतमः	इस सूत्र कि सहायता से	ल + आकृतिः इति रूपसिद्धं → लाकृतिः

अयादि संधि →

हरये

सूत्र	कार्य	स्थिति
		हरे + ए
एचोऽयवायावः		
यथासंख्यमनुदेश समानाम्	इस सूत्र कि सहायता से हरे के ए को अय् आदेश	हर् अय् + ए

संयुक्त होने पर 'हरये' → इति रूपसिद्धं

विष्णवे

सूत्र	कार्य	स्थिति
एचोऽयवायावः		विष्णो + ए
यथासंख्यमनुदेशः समानाम्	इस सूत्र कि सहायता से विष्णो के 'ओ' अव् आदेश	विष्ण् अव् + ए

संयुक्त होने पर 'विष्णवे' - इति रूप सिद्धं ।

नायकः

सूत्र	कार्य	स्थिति
एचोऽयवायावः	इस सूत्र से	नै + अकः
यथासंख्यमनुदेश समानां	'नै' कि 'ऐ' को आय् आदेश	न् आय् + अकः

संयुक्त करने पर 'नायकः' इति रूप सिद्धं ।

पावकः

सूत्र	कार्य	स्थिति
एचोऽयवायावः		पौ + अकः
यथासंख्यमनुदेशः समानां	'पौ' के 'औ' को आव् आदेश	प् आव् + अकः

संयुक्त करने पर 'पावकः' इति रूप सिद्धं

गव्यम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
		गो + यम्
वान्तो यि प्रत्यये	गो के 'ओ' को अव् आदेश	ग् अव् + यम्

संयुक्त होने पर 'गव्यम्' इति रूप सिद्धं

सूत्र	कार्य	स्थिति
		नौ + यम्
वान्तो यि प्रत्यये	नौ के 'औ' को आव् आदेश	न् आव् + यम्

संयुक्त होने पर 'नव्यम्' इति रूप सिद्ध

<u>गव्यूति</u>

सूत्र	कार्य	स्थिति
		गो + यूति
अध्वपरिमाणे	गो के ओ को अव् आदेश	ग् अव् + यूति

संयुक्त करने पर गव्यूति इति रूप सिद्ध

4/9/2000

गुण सन्धि ⇒ उपेन्द्रः

सूत्र	कार्य	स्थिति
अदेङ्गुणः	गुण संज्ञा	उप + इन्द्रः
आद्गुणः	अकार और इकार को एकार एकादेश	उपेन्द्रः इति सिद्धं

गङ्गोदकम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
अदेङ्गुणः	गुण संज्ञा	गङ्गा + उदकम्
आद्गुणः	आकार और उकार को ओकार एकादेश	गङ्गोदकम् इति सिद्धम्

कृष्णर्द्धिः

सूत्र	कार्य	स्थिति
आद्गुणः	इस सूत्र से पूर्व-पर अकार और ऋकार में गुण प्राप्त	कृष्ण + ऋद्धिः
उरण् रपरः	अत्यन्त सदृश होने के कारण 'अ' और 'ऋ' के स्थान में अर् एकादेश	कृष्णर्द्धिः इति सिद्धं

तवल्कारः

सूत्र	कार्य	स्थिति
आद्गुणः	इस सूत्र से अकार लृकार में गुण प्राप्त	तव + लृकारः
उरण रपरः	अ औ ऋ की अल एकादेश	तवल्कारः इति सिद्धं

वृद्धि सन्धि

संख्या सूत्र →

32 वृद्धिरादैच् → आत् और ऐच् को वृद्धि संज्ञा होती है।

33 वृद्धिरेचि → अवर्ण से एच् परे रहते पूर्व पर के स्थान में वृद्धि रूप एक आदेश है। यह सूत्र गुण का अपवाद है।

34 एत्येधत्यूठ्सु → अवर्ण से एनादि एति एधति और ऊठ् परे रहते पूर्व पर के स्थान में वृद्धिरूप एकादेश होता है। यह सूत्र पररूप और गुण दोनों का अपवाद है वा० प्रष्ठशब्द से ऊहिनीशब्द परे रहते

पूर्व पर के स्थान में वृद्धिरूप एक आदेश होता है।) (वा० प्र- शब्द से ऊह ऊढ ऊढि एष एष्य इन शब्दों के परे होने पर पूर्व पर के स्थान में वृद्धिरूप एक आदेश होता है) (वा० अवर्ण से ऋत शब्द परे रहते वृद्धि होती है तृतीया समास में)। (वा० प्र- वत्सतर - कम्बल - वसन - ऋण - दश इन शब्दों से ऋण शब्द परे रहते पूर्व पर के स्थान में वृद्धिरूप एकादेश होता है)।

उदाहरण → कृष्णैकत्वम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
वृद्धिरादैच्	वृद्धिसंज्ञा	कृष्ण + एकत्वम्
वृद्धिरेचि	अकार और एकार को ऐकार एकादेश	कृष्णैकत्वम् इति सिद्धम्
	गङ्गौघः	
वृद्धिरादैच्	वृद्धि संज्ञा	गङ्गा + ओघः
वृद्धिरेचि	अकार और ओकार को औकार एकादेश	गङ्गौघः

देवैश्वर्यम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
वृद्धिरादैच	वृद्धि संज्ञा	देव + ऐश्वर्यम्
वृद्धिरेचि	अकार और ऐकार को ऐकार एकादेश	देवैश्वर्यम्

कृष्णौत्कण्ठ[illegible]

सूत्र	कार्य	स्थिति
वृद्धिरादैच	वृद्धि संज्ञा	कृष्ण + औत्कण्ठ्यम्
वृद्धिरेचि	अकार और औकार को औकार एकादेश	कृष्णौत्कण्ठ्यम् इति सिद्धं

उपैति

सूत्र	कार्य	स्थिति
एत्येधत्यूठ्सु	इस वार्तिक कि सहायता से अकार और एकार को ऐकार वृद्धि एकादेश	उप + एति उपैति इति सिद्धं

उपैधते

उप + एधते

एत्येधत्यूठ्सु	अकार और एकार को ऐकार वृद्धि एकादेश	उपैधते
	प्रष्ठौहः	
सूत्र	कार्य	स्थिति
		प्रष्ठ+ऊहः
एत्येधत्यूठ्सु	अकार और ऊकार को औकार वृद्धि एकादेश	प्रष्ठौहः
	उपेतः	
सूत्र	कार्य	स्थिति
एत्येधत्यूठ्सु	इस वार्तिक से वृद्धि एकादेश नहीं होता	उप+इतः
आद्गुणः	इस सूत्र से [illegible] गुण प्राप्त	
आद्गुणः	अ और इ को अत्यन्त सदृशतम होने के कारण ए एकादेश	उपेतः इति सिद्धं

मा भवान् प्रैदिधत्

सूत्र	कार्य	स्थिति
		मा भवान् प्र+इदधित्
एत्येधत्यूठ्सु	इससे वृद्धि एकादेश प्राप्त नहीं था।	
अदेङ्गुणः	इस सूत्र से गुण प्राप्त था	
आद्गुणः	अ और इ को 'ए' गुण एकादेश	मा भवान् प्रैदिधत्

'अक्षौहिणी' सेना

सूत्र	कार्य	स्थिति
आद्गुणः	इस सूत्र से गुण प्राप्त था। इसे रोक कर।	अक्ष+ऊहिनी
अक्षादूहिन्यामुपसंख्यानम्	इस वार्तिक से अकार और ऊकार को औकार रूप वृद्धि एकादेश	अक्षौहिनी

'पूर्वपदात्संज्ञायामगः' से ऊहिनी के नकार को णकार आदेश

मा भवान् प्रेदिधत्

सूत्र	कार्य	स्थिति
		मा भवान् प्र+इदधित्
एत्येधत्यूठ्सु	इससे वृद्धि एकादेश प्राप्त नही था।	
अदेङ्गुणः	इस सूत्र से गुण प्राप्त था	
आद्गुणः	'अ' और 'इ' को 'ए' गुण एकादेश	मा भवान प्रेदिधत्

'अक्षौहिणी' सेना

सूत्र	कार्य	स्थिति
आद्गुणः	इस सूत्र से गुण प्राप्त था। इसे रोक कर।	अक्ष+ऊहिनी
अक्षादूहिन्यामुपसंख्यानं	इस वार्तिक से अकार और ऊकार को औकार रूप वृद्धि एकादेश	अक्षौहिनी

'पूर्वपदात् संज्ञायामगः' से ऊहिनी के नकार को णकार आदेश

वा०, प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु

उदाहरण ↓

प्रौहः

सूत्र	कार्य	स्थिति
आद्गुणः	यहाँ पर अकार और ऊकार से गुण प्राप्त था, उसे रोक कर।	प्र + ऊहः
प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु	इस वार्तिक से अकार और ऊकार को औकार वृद्धि एकादेश	प्रौहः इति रूपसिद्धं

प्रौढः

सूत्र	कार्य	स्थिति
आद्गुणः	अकार और ऊकार से गुण प्राप्त था, उसे रोककर	प्र + ऊढः
प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु	इस वार्तिक से अकार और ऊकार को औकार वृद्धि एकादेश	प्रौढः इति रूपसिद्धं

प्रौढिः

सूत्र	कार्य	स्थिति
आद्गुणः	अकार और ऊकार से गुण प्राप्त था, उसे रोक कर।	प्र+ऊढिः
प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु	इस वार्तिक से अकार और ऊकार को औकार वृद्धि एकादेश	प्रौढिः इति रूपसिद्धिः

प्रैषः

सूत्र	कार्य	स्थिति
एङि पररूपम्	इस सूत्र से पररूप प्राप्त था, उसे रोक कर।	प्र+एषः
प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु	इस वार्तिक से अकार और एकार को ऐकार एकादेश	प्रैषः इति रूपसिद्धिः

प्रैष्यः

सूत्र	कार्य	स्थिति
एङि पररूपम्	इस सूत्र से पररूप प्राप्त था, उसे रोक कर।	प्र+एष्यः

वा॰ → शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यं → शकन्ध्वादि गण पठित शब्दों में पररूप होता है।

४० ओमाङोश्च → अवर्ण से ओम् और आङ् परे रहते पूर्व पर के स्थान में पररूप एक आदेश होता है।

४१ अन्तादिवच्च → पूर्व पर के स्थान में हुआ एक आदेश पूर्व पर के अन्तवत् तथा पर के आदिवत् होता है।

४२ अकः सवर्णे दीर्घः → अक् से सवर्ण अच् परे रहते पूर्व पर के स्थान में दीर्घरूप एकादेश होता है।

४३ एङः पदान्तादति → पदान्त एङ् से अत् परे रहते पूर्वपर के स्थान में पूर्वरूप एकादेश होता है।

४४ सर्वत्र विभाषा गोः → लोक और वेद में एङन्त गोशब्द को विकल्प से प्रकृतिभाव होता है।

४५ ~~अनेकाल्शित् सर्वस्य → अनेकाल् और शित् आदेश सम्पूर्ण के स्थान में होता है।~~

47 अवङ् स्फोटायनस्य → पदान्त में एङन्त गोशब्द को अवङ् विकल्प से होता है अच् परे रहते।

48 इन्द्रे च → गो शब्द को अवङ् होता है इन्द्र शब्द परे रहते।

प्राच्र्छति

सूत्र	कार्य	स्थिति
आद्गुणः	इस सूत्र से गुण प्राप्त था उसे रोक कर	प्र + ऋच्छति
उपसर्गादृति धातौ	इस सूत्र से	
उरण् रपरः	इस सूत्र कि सहायता से अकार और ऋकार के स्थान पर वृद्धिरूप 'आर्' एकादेश	प्राच्र्छति

पररूप सन्धि →

उदाहरण → प्रेजते

सूत्र	कार्य	स्थिति
वृद्धिरेचि एङिपररूपं	वृद्धि प्राप्त थी, उसे रोक कर अकार और एकार के स्थान पर एकार एकादेश	प्र + एजते प्रेजते इति सिद्धं

उपोषति

सूत्र	कार्य	स्थिति
वृद्धिरेचि एङि पररूपम्	वृद्धि प्राप्त थी, उसे रोक कर अकार और ओकार के स्थान पर ओकार एकादेश	उप + ओषति उपोषति इति रूप सिद्धं

शकन्धुः

सूत्र	कार्य	स्थिति
अचोऽन्त्यादि टि शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यं	'अ' भाग कि टि संज्ञा टि संज्ञक 'अ' भाग भाग का अन्धु के 'अ' भाग के साथ पररूप एकादेश	शक + अन्धु शकन्धुः इति सिद्धं

मनीषा

सूत्र	कार्य	स्थिति
अचोऽन्त्यादि टि	अस् भाग कि टि संज्ञा	मन् अस्+ईषा
शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यं	मनस् के टि संज्ञक अस् भाग का ईषा के 'ई' वर्ण के साथ पररूप एकादेश	मनीषा इति सिद्धं

शिवायों नमः

सूत्र	कार्य	स्थिति
एङि पररूपम्	इस सूत्र से पररूप सन्धि प्राप्त नहीं थी	शिवाय+ओम् नमः
ओमाङोश्च	इस सूत्र से अकार और ओंकार के स्थान पर पररूप ओंकार एकादेश 'म्' को अनुस्वार करने पर	शिवायों नमः

शिवेहि

सूत्र	कार्य	स्थिति
		शिव + आ + इहि
आद्गुणः	आकार और इकार को एकार गुण एकादेश	शिव + एहि
अन्तादिवच्च ओमाङोश्च	इस सूत्र कि सहायता से इस सूत्र से अकार और एकार के स्थान पर पररूप एकार एकादेश	शिवेहि इति सिद्धं

दीर्घ सन्धि ->

उदाहरण -> दैत्यारिः

सूत्र	कार्य	स्थिति
		दैत्य + अरिः
अकः सवर्णे दीर्घः	इस सूत्र कि सहायता से पूर्वपर को 'आ' दीर्घ एकादेश	दैत्यारिः

श्रीशः

सूत्र	कार्य	स्थिति
अकः सवर्णे दीर्घः	पूर्व पर इकारों को ईकार दीर्घ एकादेश	श्री + ईशः श्रीशः इति सिद्धं

विष्णूदयः

सूत्र	कार्य	स्थिति
~~अकः सवर्णे दीर्घः~~ अकः सवर्णे दीर्घः	पूर्व पर उकारों के स्थान पर ऊकार दीर्घ एकादेश	विष्णु + उदयः विष्णूदयः इति सिद्धं

होतॄकारः

सूत्र	कार्य	स्थिति
अकः सवर्णे दीर्घः	पूर्व पर ऋकारों के स्थान पर ऋकार दीर्घ एकादेश	होतृ + ऋकारः होतॄकारः इति सिद्धं

पूर्वरूप सन्धि →

उदाहरण →

हरेऽव

सूत्र	कार्य	स्थिति
एचोऽयवायावः	इस सूत्र से 'ए' को अय् आदेश प्राप्त था	हरे + अव
एङः पदान्तादति	इस सूत्र कि सहायता से पदान्त एकार और पर अकार के स्थान पर एकार पूर्वरूप एकादेश करने पर।	हरेऽव

विष्णोऽव

सूत्र	कार्य	स्थिति
एचोऽयवायावः	इस सूत्र से 'ओ' को अव् आदेश प्राप्त था।	विष्णो + अव
एङः पदान्तादति	इस सूत्र कि सहायता से पदान्त ओकार और पर अकार के स्थान पर ओकार पूर्वरूप एकादेश करने पर	विष्णोऽव

सर्वत्र विभाषा गोः

उदाहरण → गोऽग्रम्, गोअग्रम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
एचोऽयवायावः	इस सूत्र से गो के ओ को अव् आदेश प्राप्त था,	गो + अग्रम्
एङः पदान्तादति	उसे रोक कर इस सूत्र से 'ओ' को पूर्वरूप प्राप्त था उसे	गोऽग्रम्
सर्वत्र विभाषा गोः	रोक कर विकल्प से प्रकृतिभाव प्राप्त था	गोअग्रम्

प्रकृतिभाव के अभाव में गोऽग्रम् यह पूर्वरूप सन्धि का रूप बना।

अवङ् स्फोटायनस्य →

उदाहरण → गवाग्रम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
एङः पदान्तादति	इससे पूर्वरूप प्राप्त था	गो + अग्रम्
सर्वत्र विभाषा गोः	उसे रोक कर विकल्प से प्रकृतिभाव प्राप्त था।	गो + अग्रम्
अवङ् स्फोटायनस्य	विकल्प से 'ओ' को	

अकः सवर्णे दीर्घः	अवङ् आदेश सवर्ण दीर्घ करने पर	गव अग्रम् गवाग्रम्

विकल्प के अभाव पक्ष मे गोऽग्रम्

इन्द्रे च

उदाहरण → गवेन्द्रः

सूत्र	कार्य	स्थिति
इन्द्रे च	गो को अवङ् आदेश	गो + इन्द्र गव + इन्द्र गवेन्द्र इति सिद्धं

१०।१०।२०००

संख्या	सूत्र
४९	दूराद्धूते च → दूर से सम्बोधन में ~~[illegible]~~ ~~[illegible]~~ है वाक्य की टि को प्लुत होता है विकल्प से।
५०	प्लुत - प्रगृह्या अचि नित्यम् → प्लुत और प्रगृह्य अच् परे रहते सदा प्रकृतिभाव से होते हैं।
५१	ईदूदेद् द्विवचनं प्रगृह्यम् → ईदन्त ऊदन्त और एदन्त द्विवचन प्रगृह्य सञ्ज्ञक होता है।
५२	अदसो मात् → मान्त अदस शब्द से परे ईकार, ऊकार की प्रगृह्य सञ्ज्ञा होती है।
५३	चादयोऽसत्वे → अद्रव्यार्थक 'च' आदि निपात सञ्ज्ञक होती हैं।
५४	प्रादयः → अद्रव्यार्थक 'प्र' आदियों की भी निपात सञ्ज्ञा होती है।
५५	निपात एकाजनाङ् → आङ् को छोड़कर एक अच् रूप निपात प्रगृह्य सञ्ज्ञक होता है।

वा० -> वाक्यस्मरणयोरङित् -> वाक्य और स्मरण अर्थ में 'आ' ङित् नहीं होता, अन्यत्र ङित होता है।

५६ ओत् -> ओदान्त निपात प्रगृह्य सञ्ज्ञक होता है।

५७ सम्बुद्धौ शाकल्यस्येतावनार्षे -> सम्बुद्धि-निमित्तक ओकार विकल्प से प्रगृह्य सञ्ज्ञक होता है अवैदिक 'इति' शब्द परे रहते।

५८ मय उञो वो वा -> मय् से परे उञ् को वकार होता है विकल्प से अच् परे रहते।

५९ इकोऽसवर्णे शाकल्यस्य ह्रस्वश्च -> पदान्त इक् को ह्रस्व होता है विकल्प से असवर्ण अच् परे रहते। ह्रस्वविधान सामर्थ्य से सन्धि-कार्य (यण्) नहीं होता।

६० अचो रहाभ्यां द्वे -> अच् से परे जो रेफ और हकार उनसे परे वर्तमान यर्

को द्वित्व होता है
वा० → न समासे → समास में ह्रस्व और प्रकृतिभाव नहीं होता।
ऋत्यकः → ह्रस्व ऋकार परे रहते पदान्त
६१ अक् को ह्रस्व होता है विकल्प से।

प्रकृतिभाव →

उदाहरण →

सूत्र	कार्य	स्थिति
अकः सवर्णे दीर्घः	इस सूत्र से दीर्घ प्राप्त था, परन्तु	आगच्छ कृष्ण ३ अत्र गौश्चरति
दूराद्धूते च	इस सूत्र से कृष्ण के आकार कि प्लुत संज्ञा	
प्लुत-प्रगृह्या अचि नित्यम्	इस सूत्र से प्रकृति-भाव	आगच्छ कृष्ण३ अत्र गौश्चरति इति सिद्धं

सूत्र	कार्य	स्थिति
इको यणचि	इस सूत्र से यण् प्राप्त था	हरी+
ईदूदेद् द्विवचनं प्रगृह्यम्	इस सूत्र से 'ई' को प्रगृह्य	
प्लुत-प्रगृह्या अचि नित्यम्	प्रगृह्य को प्रकृति भाव	हरी एतौ इति सि

सूत्र	कार्य	स्थिति
इको यणचि	इस सूत्र से यण् प्राप्त	विष्णू+इमौ
ईदूदेद् द्विवचनं प्रगृह्यम्	ऊकार को प्रगृह्य	
प्लुत-प्रगृह्या अचि नित्यम्	प्रगृह्य को प्रकृतिभाव	विष्णू इमौ इति सिद्धं

सूत्र	कार्य	स्थिति
एचोऽयवायावः	इस सूत्र से अय् आदेश प्राप्त था, उसे रोककर	गङ्गे+अमू
ईदूदेद् द्विवचनं प्रगृह्यम्	एकार को प्रगृह्य	

प्लुत-प्रगृह्य अचि नित्यम्	इससे प्रकृतिभाव	[illegible] अमू

सूत्र	कार्य	स्थिति
अकः सवर्णे दीर्घः	इस सूत्र से दीर्घ एकादेश प्राप्त था, परन्तु	अमी + ईशाः
अदसो मात्	इससे प्रगृह्य हुआ	
प्लुत-प्रगृह्या अचि नित्यम्	इस सूत्र से प्रकृति भाव	अमी ईशाः इति सिद्धं

सूत्र	कार्य	स्थिति
इको यणचि	इस सूत्र से यण् आदेश था, उसे रोक कर	रामकृष्णावमू+आसाते
अदसो मात्	इससे प्रगृह्य हुआ	
प्लुत-प्रगृह्या अचि नित्यम्	इससे प्रकृतिभाव	रामकृष्णावमू आसाते इति सिद्धं

सूत्र	कार्य	स्थिति
चादयोऽसत्त्वे	इस सूत्र से 'इ' कि निपात संज्ञा	इ + इन्द्रः
निपात एकाजनाङ्	इस सूत्र से प्रगृह्य संज्ञा	
प्लुत-प्रगृह्या अचि नित्यम्	इस सूत्र से प्रकृतिभाव	इ इन्द्रः इति सिद्धं

सूत्र	कार्य	स्थिति
अकः सवर्णे दीर्घः	इस सूत्र से दीर्घ प्राप्त था, परन्तु	उ + उमेशः
चादयोऽसत्त्वे	इस सूत्र से 'उ' कि निपात संज्ञा	
निपात एकाजनाङ्	इस सूत्र से प्रगृह्य संज्ञा	
प्लुत-प्रगृह्या अचि नित्यम्	इस सूत्र से प्रकृतिभाव	उ उमेशः इति सिद्धं

सूत्र	कार्य	स्थिति
वृद्धिरेचि	इस सूत्र से वृद्धि प्राप्त था उसे रोक कर	आ एवं नु मन्यसे
वाक्यस्मरण - योरङित्	इस वार्तिक से निपात 'आ' कि प्रगृह्य संज्ञा	
प्लुत-प्रगृह्या अचि नित्यम्	प्रगृह्य को प्रकृतिभाव	आ एवं नु मन्यसे इति सिद्धं

सूत्र	कार्य	स्थिति
वृद्धिरेचि	वृद्धि प्राप्त थी, उसे रोक कर	आ एवं किल तत
वाक्यस्मरणयोरङित्	इस वार्तिक से निपात आ की प्रगृह्य संज्ञा	
प्लुत-प्रगृह्या अचि नित्यम्	इस सूत्र से प्रगृह्य को प्रकृतिभाव	आ एवं किल तत इति सिद्धं

अहो ईशाः

सूत्र	कार्य	स्थिति
एचोऽयवायावः	इस सूत्र से अव् आदेश था उसे रोक कर	अहो + ईशा
ओत्	इससे निपात 'ओ' को	

	प्रगृह्य संज्ञा	
प्लुत-प्रगृह्या अचि नित्यम्	इससे प्रकृतिभाव	अहो ईशाः इति सिद्धं

विष्णो इति

सूत्र	कार्य	स्थिति
एचोऽयवायावः	इस सूत्र से 'ओ' को अव् प्राप्त था, उसे रोक कर	विष्णो+इति
संबुद्धौ शाकल्यस्येतावनार्षे	इस सूत्र से विकल्प से प्रगृह्य संज्ञा	
प्लुत-प्रगृह्या अचि नित्यम्	प्रकृतिभाव	विष्णो इति इति सिद्धं

प्रगृह्य संज्ञा के अभाव पक्ष में -

सूत्र	कार्य	स्थिति
एचोऽयवायावः	'ओ' को अव् आदेश	विष्णव्+इति विष्णविति
लोपः शाकल्यस्य	विकल्प से 'व्' का लोप	विष्ण इति

सूत्र	कार्य	स्थिति
अकः सवर्णे दीर्घः	दीर्घ प्राप्त था। उसे रोक कर।	किमु + उक्तम्
मय उञो वो वा	विकल्प से 'उ' को व आदेश	किम्वुक्तम् इति सिद्धं
	चक्रि अत्र	

सूत्र	कार्य	स्थिति
इको यणचि	इससे यण् प्राप्त था। उसे रोक कर	चक्री + अत्र
इकोऽसवर्णे शाकल्यस्य ह्रस्वश्च	इक् को ह्रस्व आदेश विकल्प से	चक्रि + अत्र
		चक्रि अत्र इति सिद्धं

विकल्प के अभाव पक्ष में इको यणचि से
चक्रयत्र

गौर्यौ

सूत्र	कार्य	स्थिति
		गौरी + औ
इको यणचि	इ को य् आदेश	गौर्य् + औ

अचो रहाभ्यां द्वे संयुक्त करने पर – गौर्य्यौ	य् को द्वित्व	गौर्य्य् + औ

सूत्र	कार्य	स्थिति
आद्गुणः	इससे गुण प्राप्त था, उसे रोककर	ब्रह्मा + ऋषि
ऋत्यकः	~~विकल्प से आ को ह्रस्व~~ इस सूत्र से पदान्त आकार को विकल्प से ह्रस्व हुआ	ब्रह्म + ऋषि इति सिद्धं

ह्रस्व के अभाव में –

सूत्र	कार्य	स्थिति
आद्गुणः	आकार और ऋकार को 'अ' एकादेश	ब्रह्मा + ऋषि
उरण् रपरः	ऋ के स्थान पर रपरत्व आदेश	ब्रह्मर्षि इति सिद्धं

इत्यच् सन्धिः

12/10/2000

★ अथ हल् सन्धिः ★

संख्या	सूत्र
62	स्तोः श्चुना श्चुः → सकार तवर्ग को शकार चवर्ग के योग में शकार चवर्ग होते हैं।
	शात् → शकार से परे तवर्ग को चुत्व नहीं होता।
63	ष्टुना ष्टुः → सकार तवर्ग को षकार टवर्ग के योग में षकार टवर्ग होते हैं।
64	

उदाहरण →

रामश्शेते

सूत्र	कार्य	स्थिति
		रामस् + शेते
स्तोः श्चुना श्चुः	इस सूत्र से सकार के योग में षकार होने पर सकार को भी षकार हो गया	रामश्शेते
		इति सिद्धं

रामश्चिनोति

सूत्र	कार्य	स्थिति
		रामस् + चिनोति

स्तोः श्चुना श्चुः	इस सूत्र से सकार के योग मे शकार होने पर सकार को भी शकार हो गया	रामश्शिनो इति सिद्ध

सच्चित्

सूत्र	कार्य	स्थिति
स्तोः श्चुना श्चुः	इस सूत्र से तकार के योग मे चकार होने पर तकार को भी चकार हो गया	सत्+चित् सच्चित्

शार्ङ्गिञ्जयः

सूत्र	कार्य	स्थिति
स्तोः श्चुना श्चुः	इस सूत्र से तवर्ग (नकार) के योग मे चवर्ग (जकार) के होने पर तवर्ग (नकार) को चवर्ग (ञकार) हो गया	शार्ङ्गिन्+जय शार्ङ्गिञ्जय इति सिद्ध

विश्नः

सूत्र	कार्य	स्थिति
स्तोः श्चुना श्चुः	इस सूत्र से शकार के बाद तवर्ग होने पर उसे चवर्ग प्राप्त था	विश् + नः
शात्	इस सूत्र ने 'श' के बाद तवर्ग को चवर्ग होने का निषेध किया	विश्नः इति सिद्धं

प्रश्नः

सूत्र	कार्य	स्थिति
स्तोः श्चुना श्चुः	इस सूत्र से शकार के बाद तवर्ग होने पर उसे चवर्ग प्राप्त था	प्रश् + नः
शात्	इस सूत्र ने 'श' के बाद तवर्ग को चवर्ग होने का निषेध किया	प्रश्नः इति सिद्धं

रामष्षष्ठः

सूत्र	कार्य	स्थिति
ष्टुना ष्टुः	इस सूत्र से सकार के योग मे षकार होने पर सकार को भी षकार हो गया	रामस्+षष्ठः रामष्षष्ठः इति सिद्धं

रामष्टीकते

सूत्र	कार्य	स्थिति
ष्टुना ष्टु	इस सूत्र से सकार के योग मे टवर्ग होने पर सकार को षकार हो गया	रामस्+टीकते रामष्टीकते इति सिद्धं

तट्टीका

सूत्र	कार्य	स्थिति
ष्टुना ष्टुः	से सूत्र से तवर्ग के योग मे टवर्ग होने पर तवर्ग	तत्+टीका तट्टीका इति सिद्धं

सूत्र	को टवर्ग हो गया चक्रिण्ढौकसे कार्य	स्थिति
		चक्रिन् + ढौकसे
ष्टुना ष्टुः	इस सूत्र से तवर्ग (नकार) को टवर्ग (ढकार) के योग मे टवर्ग (णकार) हुआ।	चक्रिण्ढौकसे इति सिद्धं

१७/१०/२०००

संख्या सूत्र

६५ न पदान्ताट्टोरनाम् → पदान्त टवर्ग से परे नाम भिन्न सकार तवर्ग को ष्टुत्व नहीं होता।

वा० → पदान्त टवर्ग से परे नाम, भिन्न सकार तवर्ग को ष्टुत्व नहीं होता, ऐसा कहना चाहिए।

६६ तोः षि → तवर्ग को षकार परे रहते ष्टुत्व नहीं होता।

६७ झलां जशोऽन्ते → पदान्त में झलों को जश्

होते हैं।

६८ यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा → पदान्त यर् को अनुनासिक परे रहते अनुनासिक विकल्प से होता है।

वा० → प्रत्यये भाषायां नित्यम् – लोक में प्रत्ययावयव अनुनासिक परे रहते पदान्त यर् को नित्य अनुनासिक होता है।

६९ तो[illegible] → तवर्ग को लकार परे रहते परसवर्ण होता है।

उदाहरण → षट् सन्तः

सूत्र	कार्य	स्थिति
ष्टुना ष्टुः	टवर्ग के योग में सकार को षकार प्राप्त था	षट् + सन्तः
न पदान्ताट्टोरनाम्	उसे रोक कर ष्टुत्व का निषेध हुआ।	षट् सन्तः सिद्धं

षट्ते

सूत्र	कार्य	स्थिति
ष्टुना ष्टुः	टवर्ग के योग में तवर्ग	षट् + ते

न पदान्ताट्टोरनाम्	को टवर्ग प्राप्त था उसे रोक कर ष्टुत्व का निषेध हुआ	षट्ते इति सिद्धं

षण्णाम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
ष्टुना ष्टुः	इस सूत्र से ष्टुत्व प्राप्त था	षड् + नाम्
न पदान्ताट्टोरनाम्	इस सूत्र से ष्टुत्व का निषेध हुआ	
अनाम्-नवति-नगरी णामिति वाच्यम्	इस वार्तिक से ष्टुत्व	षड् + णाम्
यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा प्रत्यये भाषायां नित्यं	ड् को ण् (अनुस्वार)	षण्णाम् इति सिद्धं

षण्णवति

सूत्र	कार्य	स्थिति
ष्टुना ष्टुः	इस सूत्र से ष्टुत्व प्राप्त था	षड् + नवतिः
न पदान्ताट्टोरनाम्	इस सूत्र से ष्टुत्व का निषेध हुआ	

अनाम्-नवति-नगरी णामिति वाच्यम्	इस वार्तिक से ष्टुत्व	षड् + णवति
यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा	विकल्प से ड् को ण्	षण्णवति इति सिद्धम्

षण्णगर्यः पक्षे — षड्णवति

सूत्र	कार्य	स्थिति
ष्टुना ष्टुः	इस सूत्र से डकार के योग में नकार होने पर ष्टुत्व था।	षड् + नगर्यः
न पदान्ताट्टोरनाम्	इस सूत्र से ष्टुत्व का निषेध हुआ	
अनाम्-नवति-नगरी णामिति वाच्यम्	इस वार्तिक से ष्टुत्व	षड् + णगर्यः
यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा	विकल्प से ड् को ण्	षण्णगर्यः इति सिद्धम्

पक्षे - षड्णगर्यः

सन्षष्ठः

सूत्र	कार्य	स्थिति
ष्टुना ष्टुः	इस सूत्र ष्टुत्व प्राप्त था	सन् + षष्ठः

	उसे टोक कर	
तोः षि	इस सूत्र से ष्टुत्व का निषेध हुआ	सन्षष्ठः इति सिद्धं

वागीशः

सूत्र	कार्य	स्थिति
		वाक् + ईशः
झलां जशोऽन्ते	इस सूत्र से क् को ग् आदेश	वाग् + ईशः
		वागीशः इति सिद्धं

एतन्मुरारिः

सूत्र	कार्य	स्थिति
		एतद् + मुरारिः
यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा	विकल्प से दकार को नकार (यर) आदेश	एतन्मुरारिः

विकल्प के अभाव पक्ष मे एतद् मुरारिः इति सिद्धं

तन्मात्रम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
		तद् + मात्रम्

प्रत्यये भाषायां नित्यम्	इस सूत्र से दकार को अनुनासिक नकार प्राप्त	तन्मात्रम् इति सिद्धं

चिन्मयम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा	इस सूत्र से विकल्प से तकार को नकार प्राप्त था,	चित् + मयम्
प्रत्यये भाषायां नित्यम्	इस वार्तिक से तकार को अनुनासिक नकार नित्य ही हुआ	चिन्मयम् इति सिद्धं

तल्लयः

सूत्र	कार्य	स्थिति
		तद् + लयः
तोर्लि	इस सूत्र से पदान्त दकार को लकार परसवर्ण हुआ	तल्लयः इति सिद्धं

विद्वाँल्लिखति

सूत्र	कार्य	स्थिति
तोर्लि	इस सूत्र से पदान्त अनुनासिक नकार को (अनुनासिक लकार) हुआ	विद्वान् + लिखति विद्वाँल्लिखति इति सिद्ध

१५।१०।२०००

संख्या सूत्र

७० उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य → उद् से परे वर्तमान स्था और स्तम्भ को पूर्वसवर्ण होता है।

७१ तस्मादित्युत्तरस्य → पञ्चमी निर्देश से किए जानेवाले कार्य अन्य वर्णों के व्यवधान से रहित पर के स्थान में होता है।

७२ आदेः परस्य → पर को विधान किया गया कार्य पर के आदि को होता है।

७३ झरो झरि सवर्णे → हल् से परे झर का विकल्प से लोप होता है सवर्ण झर परे रहते।

७४ खरि च → खर् परे रहते झलों को चर् होते हैं।

७५ झयो होऽन्यतरस्याम् → झय् से परे हकार को पूर्वसवर्ण होता है विकल्प से।

७६ शश्छोऽटि → झय् से परे श को छ होता है अट् परे रहते विकल्प से

वा०- छत्वममीति वाच्यम् → झय् से परे श को छ हो विकल्प से अम परे रहते, ऐसा कहना चाहिए।

उदाहरण —

उत्थानम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य	इस सूत्र से तथा	उद् + स्थानम्
आदेः परस्य	इस सूत्र कि सहायता से स् को थ्	उद् + थ्थानम्
झरो झरि सवर्णे	थकार को विकल्प से लोप	उद् + थानम्
खरि च	दकार को तकार	उत्थानम्

इति सिद्धं

	थ् लोप के अभाव में	उद् + थ् थानम्
खरि च	द् को त्	उत् + थ् थानम्
खरि च	थ् को त्	उत् + त् थानम्
		उत्थानम्
		इति सिद्धं

उत्तम्भनम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य	इस सूत्र से तथा	उद् + स्तम्भनम्
आदेः परस्य	इस सूत्र कि सहायता सें स् को थ्	उद् + थ् तम्भनम्
झरो झरि सवर्णे	विकल्प से थकार का लोप प्राप्त	उद् + तम्भनम्
खरि च	दकार को तकार	उत्तम्भनम्
		उत्तम्भनम्
~~खरि च~~	~~थ् लोप के अभाव में~~ ~~द् को त्~~	~~उद् + थ् तम्भनम्~~

	थ् लोप के अभाव में	उद् + थ् तम्भनम्
खरि च	द् को त्	उत् + थ् तम्भनम्
खरि च	थ् को त्	उत्तम्भनम्
		इति सिद्धं

वाग्घरिः

सूत्र	कार्य	स्थिति
		वाक् + हरिः
झलां जशोऽन्ते	सूत्र से क् को ग्	वाग् + हरिः
झयो होऽन्यतरस्याम्	इस सूत्र से ह् को घ् विकल्प से	वाग्घरिः
		इति सिद्धं

विकल्प के अभाव पक्ष में वाग्हरिः

तच्छिवः

सूत्र	कार्य	स्थिति
		तद् + शिव
श्चुना श्चुः	तवर्ग (द्) को चवर्ग (ज्)	तज् + शिव
खरि च	ज् को च्	तच् + शिव
शश्छोऽटि	विकल्प से श् को छ्	तच् + छिव
		तच्छिव
		इति सिद्धं

श् को छ् के अभाव में तच्शिव

तच्छ्लोकेन

सूत्र	कार्य	स्थिति
		तद् + श्लोकेन
श्चुना श्चुः	तवर्ग (द्) को चवर्ग (ज्)	तज् + श्लोकेन
खरि च	ज् को च्	तच् + श्लोकेन
छत्वममीति वाच्यम्	विकल्प से श् को छ्	तच्छ्लोकेन
	विकल्प के अभाव पक्ष में	तच्श्लोकेन

19/10/2000

संख्या सूत्र

77 मोऽनुस्वारः → मान्त पद को अनुस्वार होता है हल् परे रहते।

78 नश्चापदान्तस्य झलि → अपदान्त नकार मकार को अनुस्वार होता है झल परे रहते।

79 अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः → अनुस्वार को यय् परे रहते परसवर्ण होता है।

80 वा पदान्तस्य → पदान्त अनुस्वार को यय् परे रहते विकल्प से परसवर्ण होता है।

८१ मो राजि समः क्वौ → क्विबन्त राज् धातु परे रहते सम् के म् को मकार होता है। (अर्थात् म् को अनुस्वार नहीं होता)।

८२ हे मपरे वा → मपरक हकार परे रहते म् को म् विकल्प से होता है।

वा० → यवलपरे यवला वा → य-व-ल परक हकार परे रहते मकार को क्रम से य-व-ल होते हैं विकल्प से।

८३ नपरे नः → नपरक हकार परे रहते म् को न् होता है विकल्प से,

८४ ङः सि धुट् → ङ् से परे स को धुट् का आगम होता है विकल्प से,

८५ आद्यन्तौ टकितौ → टित् कित् जिसे ... जाए उसके आदि और अन्त अवय... होते हैं; अर्थात् टित् आदि, कित् अन्त...

उदाहरण →

हरिं वन्दे

सूत्र	कार्य	स्थिति
		हरिम् + वन्दे
मोऽनुस्वारः	इस सूत्र से म् को अनुस्वार हुआ	हरिं वन्दे इति सिद्धं

यशांसि

सूत्र	कार्य	स्थिति
		यशान् + सि
नश्चापदान्तस्य झलि	इस सूत्र से न् से परे झल् रहते न् को अनुस्वार हुआ	यशांसि इति सिद्धं

आक्रंस्यते

सूत्र	कार्य	स्थिति
		आक्रम् + स्यते
नश्चापदान्तस्य झलि	इस सूत्र से मकार से झल् परे रहते म् को अनुस्वार हुआ	आक्रंस्यते इति सिद्धं

शान्तः

सूत्र	कार्य	स्थिति
		शाम् + तः
मोऽनुस्वारः	पदान्त म् को हल् परे रहते अनुस्वार	शां + तः
अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः	अनुस्वार को परसवर्ण नकार	शान्तः

त्वङ्करोषि

सूत्र	कार्य	स्थिति
		त्वम् + करोषि
मोऽनुस्वारः	पदान्त म् को अनुस्वार हल् परे रहते	त्वंकरोषि
वा पदान्तस्य	विकल्प से अनुस्वार को परसवर्ण हुः	त्वङ्करोषि इति सिद्धं

सम्राट्

सूत्र	कार्य	स्थिति
		सम्+राट्
मोऽनुस्वारः	इस सूत्र से म् को	

	अनुस्वार होना था, उसे रोककर	
मो राजि समः क्वौ	इस सूत्र से म् को म् ही हुआ	
	संयुक्त करने पर	सम्राट् इति सिद्धं

किम् ह्मलयति

सूत्र	कार्य	स्थिति
मोऽनुस्वारः	इस सूत्र से म् को अनुस्वार प्राप्त था उसे रोक कर	किम् + ह्मलयति
हे मपरे वा	इस सूत्र से पदान्त म् को हकार परे रहते विकल्प से म् को म् ही हुआ	किम् + ह्मलयति
	अभाव पक्ष में	किं ह्मलयति इति सिद्धं

कियँह्यः

सूत्र	कार्य	स्थिति
मोऽनुस्वारः	इस सूत्र से म् को अनुस्वार प्राप्त था, उसे रोक कर	किम् + ह्यः
यवलपरे यवला वा	इस वार्तिक से म् को विकल्प से अनुनासिक य् हुआ	कियँह्यः इति सिद्धं
	विकल्प के अभाव पक्ष में	किं ह्यः

किवँह्वलयति

सूत्र	कार्य	स्थिति
मोऽनुस्वारः	इस सूत्र से म् को अनुस्वार प्राप्त था उसे रोक कर	किम् + ह्वलयति
यवलपरे यवला वा	विकल्प से म् को अनुनासिक व् हुआ	किवँह्वलयति इति सिद्धं
	अभाव पक्ष में अनुस्वार	किंह्वलयति

किँल्ह्लादयति

सूत्र	कार्य	स्थिति
मोऽनुस्वारः	इस सूत्र से म् को अनुस्वार प्राप्त था उसे रोक कर	किम् + ह्लादयति
यवलपरे यवला वा	विकल्प से म् को ल् अनुनासिक प्राप्त था	किँल्ह्लादयति
	अभाव पक्ष में अनुस्वार	किं ह्लादयति

किन्ह्नुतः

सूत्र	कार्य	स्थिति
मोऽनुस्वारः	इस सूत्र से म् को अनुस्वार प्राप्त था। उसे रोक कर	किम् + ह्नुते
नपरे नः	विकल्प से म् को न् हुआ	किन्ह्नुते
	अभाव पक्ष में अनुस्वार होने पर	किं ह्नुते
		इति सिद्धं

षट्सन्तः

सूत्र	कार्य	स्थिति
		षड् + सन्
डः सि धुट्	इस सूत्र से धुट् का आगम	षड्धुट् + न

20/10/2000

संख्या	सूत्र
८६	ङ्णोः कुक् टुक् शरि → ङकार णकार को कुक् और टुक् का आगम होता है शर् परे रहते क्रम से।
	वा० → चयो द्वितीयाः शरि पौष्करसादेरिति वाच्यम् → चयों को द्वितीय वर्ण होते हैं शर् परे रहते पौष्करसादि ऋषि के मत में
८७	नश्च → नान्त से परे स को धुट् का आगम होता है विकल्प से।
८८	शि तुक् → पदान्त नकार को शकार परे रहते तुक् का आगम होता है विकल्प से।

८६ ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम् → ह्रस्व से परे जो ङम् तदन्त पद से परे अच् को प्रायः ङमुट् का आगम होता है।

उदाहरण →

प्राङ्ख्षष्ठः

सूत्र	कार्य	स्थिति
		प्राङ् + षष्ठः
ङ्णोः कुक् टुक् शरि	कुक् का आगम	प्राङ्क् + षष्ठः
	(अनुबन्ध करने पर	प्राङ्क्षष्ठः)
चयो द्वितीयाः शरि पौष्करसादेरिति वाच्यम्	विकल्प से क् को ख् करने पर	प्राङ्ख्षष्ठः इति सिद्धं
	पक्ष में क् और ष् के योग में क्ष बनने पर	प्राङ्क्षष्ठः इति रूपम्

कुक् आगम के अभाव पक्ष में प्राङ्षष्ठः

सुगण्ट्षष्ठः

सूत्र	कार्य	स्थिति
		सुगण् + षष्ठः
ङ्णोः कुक् टुक् शरि	टुक् का आगम	सुगण् ट् + षष्ठः

चयो द्वितीयाः शरि पौष्करसादेरिति वाच्यम्	विकल्प से ट् को ठ् करने पर	सुगण्ठ्+षष्ठः

अभाव पक्ष में 'सुगण्ट्षष्ठ' इति रूपम्।

टुक् आगम के अभाव में 'सुगण्षष्ठः'।

सन्त्सः

सूत्र	कार्य	स्थिति
		सन् + सः
नश्च	विकल्प से धुट् का आगम	सन्ध् + सः
खरि च	ध् को त्	सन्त् + सः
		सन्त्सः इति सिद्धं

पक्ष में सन्सः

सञ्छम्भुः

सूत्र	कार्य	स्थिति
		सन् + शम्भुः
शि तुक्	विकल्प से तुक् का आगम	सन्त् + शम्भुः
स्तोः श्चुना श्चुः	तवर्ग को चवर्ग	सन्च् + शम्भुः
स्तोः श्चुना श्चुः	न् को ञ्	सञ्च् + शम्भुः
शश्छोऽटि	श को छ विकल्प से	सञ्च् + छम्भुः

तुक् के अभाव में सन्छम्भुः
श को छ और तुक् आगम के अभाव में सन्शम्भुः

प्रत्यङ्ङात्मा

सूत्र	कार्य	स्थिति
		प्रत्यङ् + आत्मा
ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्	ङुट् आगम अनुबन्धलोप करने पर	प्रत्यङ् ङ् + आत्मा
	संयुक्त करने पर प्रत्यङ्ङात्मा इति सिद्धम्	

~~[illegible]~~ सन्नच्युतः

सूत्र	कार्य	स्थिति
		सन् + अच्युतः
ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्	नुट् आगम अनुबन्धलोप करने पर	सन्न् + अच्युतः
	संयुक्त करने पर सन्नच्युतः इति सिद्धम्	

सुगण्णीशः

सूत्र	कार्य	स्थिति
		सुगण् + ईशः
ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्	णुट् आगम	सुगण्ण् + ईशः

संयुक्त करने पर सुगण्णीशः इति सिद्धं

२१।१०।२०००

संख्या सूत्र

६० समः सुटि → सम् को रु होता है सुट् परे रहते।

६१ अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तु वा → इस रु प्रकरण में रु से पूर्व अच् को अनुनासिक होता है विकल्प से।

६२ अनुनासिकात् परोऽनुस्वारः → अनुनासिक पक्ष को छोड़कर रु से पूर्ववर्ती अच् से परे (अर्थात् - ऊपर), अनुस्वार का आगम होता है।

६३ खरवसानयोर्विसर्जनीयः → खर् परे रहते अथवा अवसान में पदान्त रेफ को विसर्ग होता है। (वा० — सुम् पुम् कान् इनके विसर्ग को स होता है)।

६४ पुमः खय्यम्परे → अम्परक खय् परे

रहते पुम् के मकार को रु होता है।

९५ नश्छव्यप्रशान् → अम् परक छव् परे रहते नान्त पद को रु होता है प्रशान् शब्द को छोड़कर।

९६ विसर्जनीयस्य सः → खर् परे रहते विसर्जनीय को स होता है।

९७ नॄन् पे → नॄन् के नकार को रु होता है विकल्प से पकार परे रहते।

९८ कुप्वोः ≍क ≍पौ च → कवर्ग पवर्ग परे रहते विसर्ग को क्रम से जिह्वामूलीय और उपध्मानीय होते हैं, पक्ष में विसर्ग भी होता है।

९९ तस्य परमाम्रेडितं → द्विरुक्त के पहले रूप को आम्रेडित सञ्ज्ञा होती है।

१०० कानाम्रेडिते → कान् के नकार को रु होता है आम्रेडित परे रहते।

१०१ ह्रस्व को छ परे रहते तुक् का आगम होता है।

१८ पदान्ताद्वा → पदान्त दीर्घ से छ परे रहते तुगागम होता है विकल्प से।

उदाहरण → सँस्कर्ता

सूत्र	कार्य	स्थिति
मोऽनुस्वारः	म् को अनुस्वार प्राप्त था उसे रोक कर	सम् + स्कर्ता
समः सुटि	म् को रु हुआ	सरु + स्कर्ता
अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तु वा	विकल्प से अनुनासिक	सँरु + स्कर्ता
अनुनासिकात् परोऽनुस्वारः	जहाँ अनुनासिक नहीं हुआ	संरु + स्कर्ता
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	र् को विसर्ग	सँः + स्कर्ता, संः
संपुंकानां सो वक्तव्यः	विसर्गों को स् करने पर	सँस्स्कर्ता, संस्स इति सिद्धं

पक्ष में संस्कर्ता इति रूपम्

पुंस्कोकिलः

सूत्र	कार्य	स्थिति
मोऽनुस्वारः	म् को अनुस्वार प्राप्त था उसे रोक कर	पुम् + कोकिलः

पुमः खय्यम्परे	पुम् के म् को रु	पुर् + कोकिलः
अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तु वा	विकल्प से अनुनासिक करने पर	पुँर् + कोकिलः
अनुनासिकात् परोऽनुस्वारः	जहाँ अनुनासिक नहीं हुआ	पुंर् + कोकिलः
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	र् को विसर्ग	पुँः + कोकिलः, पुंः + कोकिलः
संपुंकानां सो वक्तव्यः	विसर्ग को स् करने पर	पुँस्कोकिलः, पुंस्कोकिलः

चक्रिँस्त्रायस्व

सूत्र	कार्य	स्थिति
नश्चापदान्तस्य झलि	नकार को अनुस्वार प्राप्त था, उसे रोक कर	चक्रिन् + त्रायस्व
नश्छव्यप्रशान्	चक्रिन् के न् को रु	चक्रिर् + त्रायस्व
अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तु वा	विकल्प से अनुनासिक	चक्रिँर् + त्रायस्व
अनुनासिकात् परोऽनुस्वारः	जहाँ विकल्प से अनुनासिक नहीं हुआ	चक्रिंर् + त्रायस्व
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	र् को विसर्ग	चक्रिँः + त्रायस्व, चक्रिंः + त्रायस्व

विसर्जनीयस्य सः | विसर्ग को स् | चक्रिँस्त्रायस्व, चक्रिंस्त्रायस्व

पक्ष में चक्रिंत्रायस्व इति रूपम्

नॄँ≍पाहि

सूत्र	कार्य	स्थिति
नश्चापदान्तस्य झलि	नकार को अनुस्वार प्राप्त था। उसे रोककर	नॄन् + पाहि
नॄन् पे	विकल्प से न् को रु	नॄरु + पाहि
अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तु वा	विकल्प से अनुनासिक	नॄँरु + पाहि
अनुनासिकात् परोऽनुस्वारः	जहाँ अनुनासिक नहीं हुआ वहाँ अनुस्वार	नॄंरु + पाहि
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	र् को विसर्ग	नॄँः+पाहि, नॄंः+पाहि
कुप्वोः ≍क ≍पौ च	विकल्प से जिह्वामूलीय और उपध्मानीय	नॄँ≍पाहि, नॄं≍पाहि

काँस्कान्

सूत्र	कार्य	स्थिति
नश्छव्यप्रशान् / नश्यापदान्तस्य झलि	न को अनुस्वार प्राप्त था।	
तस्य परमाम्रेडितम्	कान् कि आम्रेडित सञ्ज्ञा उसे हटाकर	कान् + कान्
तस्य परमाम्रेडितम्	कान् कि आम्रेडित सञ्ज्ञा	
कानाम्रेडिते	न् को रु	कारु + कान्
अत्रानुनासिकः	विकल्प से अनुनासिक	काँरु + कान्
पूर्वस्य तु वा		
अनुनासिकात् परोऽनुस्वारः	जहाँ अनुनासिक नहीं हुआ	कांरु + कान्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रु को विसर्ग	काँः + कान्, कांः + कान्
संपुंकानां सो वक्तव्यः	विसर्गों को स् करने पर	काँस्कान्, कांस्कान् इति सिद्धं

पक्ष में कांकान् इति रूपम्

शिवच्छाया

सूत्र	कार्य	स्थिति
		शिव + छाया

छे च	ह्रस्व को तुक् का आगम छ के योग में	शिवत् + छाया
स्तोः श्चुना श्चुः	त् को च्	शिवच्छाया इति सिद्धं

लक्ष्मीच्छाया

सूत्र	कार्य	स्थिति
		लक्ष्मी + छाया
पदान्ताद्वा	विकल्प से तुक् का आगम छ परे रहते	लक्ष्मीत् + छाया
स्तोः श्चुना श्चुः	त् को च्	लक्ष्मीच्छाया

पक्ष में लक्ष्मीछाया इति सिद्धं

इति हल् सन्धि प्रकरणम्

———— ः०ः ————

२३।३०।२०००

अथ विसर्गसन्धिप्रकरणम्

१०३ विसर्जनीयस्य सः → विसर्जनीय को स होता है खर् परे रहते।

१०४ वा शरि → शर् परे रहते विसर्ग को विसर्ग होता है विकल्प से।

१०५ स - सजुषो रुः → पदान्त सकार और सजुष् शब्द के षकार को रु होता है।

१०६ अतो रोरप्लुतादप्लुते → अप्लुत अत् से परे रु को उ होता है अप्लुत अत् परे रहते।

१०७ हशि च → अप्लुत अत् से परे रु को उ होता है हश् परे रहते।

१०८ भो - भगो - अघो - अ - पूर्वस्य योऽशि → भो - भगो - अघो और अकार है पूर्व में जिसके ऐसे रु को य् होता है अश् परे रहते।

१०९ हलि सर्वेषाम् → भो - भगो - अघो - अ पूर्वक यकार का लोप होता है हल् परे रहते।

११० रोऽसुपि → अहन् शब्द को रेफादेश होता है,

सुप् परे हो तो नहीं होता ।
१११ रोरि → रेफ का रेफ परे रहते लोप
होता है ।
११२ ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः → लोपनि[illegible]
ढकार और रेफ परे रहते पूर्व अण्
को दीर्घ होता है ।
११३ विप्रतिषेधे परं कार्यम् → तुल्यबलविरो[illegible]
में पर कार्य होता है ।
११४ एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि
→ ककार रहित एतत् और तत् शब्द
सम्बन्धी सु का लोप होता है हल्
परे रहते ; नञ समास मे नहीं होता ।
११५ सोऽचि लोपे चेत् पादपूरणम् → तत्
शब्द सम्बन्धी सु का लोप होता
है अच् परे रहते, यदी लोप होने पर ही
पाद - पूर्ति होती हो
उदाहरण →

विष्णुस्त्राता

सूत्र	कार्य	स्थिति
		विष्णुः + त्राता
विसर्जनीयस्य सः	विसर्गों को स	विष्णुस + त्राता
		विष्णुस्त्राता इति सिद्धं

हरिः शेते

सूत्र	कार्य	स्थिति
विसर्जनीयस्य सः	इस सूत्र से शर् परे रहते विसर्गों को नित्य स् प्राप्त था, उसे रोककर	हरिः + शेते
वा शरि	इस सूत्र से विकल्प से विसर्ग को स् हुआ	हरिस् + शेते
स्तोः श्चुना श्चुः	स् को श्	हरिश्शेते
विकल्प के	अभाव में हरिः शेते	इति सिद्धं

~~शिवस्+अर्च्यः~~ शिवोऽर्च्यः

सूत्र	कार्य	स्थिति
		शिवस् + अर्च्यः
स-सजुषो रुः	स् को रु	शिव रु + अर्च्यः
अतो रोरप्लुतादप्लुते	रु को उ करने पर	शिव उ + अर्च्यः
आद्गुणः	अकार-उकार को गुण एकादेश	शिवो + अर्च्यः
एङः पदान्तादति	अकार को पररूप करने पर	शिवोऽर्च्यः

शिवो वन्द्यः

सूत्र	कार्य	स्थिति
		शिवस् + वन्द्यः
स-सजुषो रुः	स् को रु करने पर	शिव रु + वन्द्यः
हशि च	रु को उ करने पर	शिव उ + वन्द्यः
आद्गुणः	अकार और उकार को ओकार गुण करने पर	शिवो वन्द्य इति सिद्धं

देवा इह

सूत्र	कार्य	स्थिति
		देवास् + इह
स-सजुषो रुः	स् को रु	देवा रु + इह
भो-भगो-अघो-अ-पूर्वस्य योऽशि	विकल्प से रु को य् आदेश होता है अश् (इ) परे रहने पर	देवाय् + इह = देवायिह
लोपः शाकल्यस्य	विकल्प से य् का लोप	देवा इह इति सिद्ध

भो देवाः

सूत्र	कार्य	स्थिति
		भोस् + देवाः
स-सजुषो रुः	स को रु	भोरु + देवाः
भो-भगो-अघो-अ-पूर्वस्य योऽशि	रु को य्	भोय् + देवाः
हलि सर्वेषाम्	य् का लोप	भो देवाः इति सिद्ध

भगो नमस्ते

सूत्र	कार्य	स्थिति
		भगोस् + नमस्ते
स-सजुषो रुः	स् को रु	भगोरु + नमस्ते
भो-भगो-अघो-अ	रु को यकार	भगोय् + नमस्ते
पूर्वस्य योऽशि		
हलि सर्वेषाम्	यकार का लोप	भगो नमस्ते इति सिद्धम्

अघो याहि

सूत्र	कार्य	स्थिति
		अघोस् + याहि
स-सजुषो रुः	स् को रु	अघो रु + याहि
भो-भगो-अघो-अ-पूर्वस्य योऽशि	रु को य् करने पर	अघोय् + याहि
हलि सर्वेषाम्	य् का लोप	अघो याहि

अहरहः

सूत्र	कार्य	स्थिति
		अहन् + अहः

रोऽसुपि	न् को रेफ आदेश	अहर् + अहः
	संयुक्त करने पर	अहरहः

अहर्गणः

सूत्र	कार्य	स्थिति
		अहन् + गणः
रोऽसुपि	न को रेफ आदेश	अहर् + गणः
	संयुक्त करने पर	अहर्गणः

पुना रमते

सूत्र	कार्य	स्थिति
		पुनर् + रमते
रोरि	रेफ परे रहते पूर्व रेफ का लोप	पुन + रमते
ढ्लोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः	(अण्) स को दीर्घ	पुना रमते इति सिद्धं

हरी रम्यः

सूत्र	कार्य	स्थिति
		हरिस् + रम्यः
स-सजुषो रुः	स् को रु	हरिरु + रम्यः
रोरि	पूर्व रेफ का लोप	हरि + रम्यः

ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः	इ को दीर्घ आदेश	हरीरम्य इति सिद्धं

शम्भू राजते

सूत्र	कार्य	स्थिति
		शम्भुस् + रा...
स-सजुषो रुः	स् को रु	शम्भुर् + राजते
रो रि	पूर्व रेफ का लोप	शम्भु + राजते
ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः	उ (अण्) को दीर्घ	शम्भू राजते

मनोरथः

सूत्र	कार्य	स्थिति
		मनस् + रथः
स-सजुषो रुः	स् को रु	मनरु + रथः
विप्रतिषेधे परं कार्यम्	इस सूत्र कि सहायता से	
हशि च	रु को उ	मन उ + रथः
आद्गुणः	अकार - उकार को गुण ओकार एकादेश	मनो + रथः मनोरथः इति सिद्धं

एष विष्णुः

सूत्र	कार्य	स्थिति
स-सजुषो रुः	स् को र प्राप्त था, उसे रोककर	एषस् + विष्णुः
एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ् समासे हलि	स् का लोप	एष विष्णुः इति सिद्धं

स शम्भुः

सूत्र	कार्य	स्थिति
स-सजुषो रुः	स् को रु प्राप्त था, उसे रोककर	सस् + शम्भुः
एतत्तदोः सुलोपो-ऽकोरनञ् समासे हलि	स् का लोप	स शम्भुः इति सिद्धं

सैष दाशरथी रामः

सूत्र	कार्य	स्थिति
स-सजुषो रुः	स् को रु प्राप्त था, उसे रोक कर	सस् + एषः
सोऽचि लोपे चेत् पादपूरणम्	लोप करने से वृद्धि कर पाद कि पूर्ति होती है	स + एषः
वृद्धिरेचि	अकार - एकार को ऐकार वृद्धि एकादेश	सैषः इति सिद्धं

इति विसर्गसन्धिप्रकरणम्

३१/१०/२०००

अथ षड्लिङ्गेषु - अजन्त पुंल्लिङ्गाः

११६ अर्थवद धातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् → धातु, प्रत्यय और प्रत्ययान्त से भिन्न अर्थवान शब्द स्वरूप की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा होती है।

११७ कृत्तद्धित - समासाश्च → कृदन्त, तद्धितान्त, और समास की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा होती है।

११८ स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस् - ङेभ्याम्भ्यस् - ङसिभ्याम्भ्यस् - ङसोसाम् - ङ्योस्सुप् ।

११९ ङ्याप् - प्रातिपदिकात्

१२० प्रत्ययः

१२१ परश्च → ङ्यन्त, आबन्त और प्रातिपदिक से परे 'सु' आदि प्रत्यय होते हैं।

१२२ सुपः → सुप् के तीन वचन क्रम से एकवचन, द्विवचन, बहुवचन सञ्ज्ञक होते हैं।

१२३ द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने → द्वित्व की

विवक्षा में द्विवचन और एकत्व की विवक्षा में एकवचन होता है।

१२४ विरामोऽवसानम् → वर्णों के अभाव की अवसान सञ्ज्ञा होती है।

१२५ सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ → एक विभक्ति में जिनका समान रूप देखा जाए वहाँ उनमें से एक ही शेष रहता है (अन्य का लोप होता है)।

१२६ प्रथमयोः पूर्वसवर्णः → अक् से प्रथमा-द्वितीया सम्बन्धी अच् परे रहते पूर्वसवर्ण दीर्घ एकादेश होता है।

१२७ नादिचि → अवर्ण से इच् परे रहते पूर्वसवर्ण दीर्घ नहीं होता।

१२८ बहुषु बहुवचनम् → बहुत्व की विवक्षा में बहुवचन होता है।

१२९ चुटू → प्रत्यय के आदि चवर्ग और टवर्ग की इत्सञ्ज्ञा होती है।

१३० विभक्तिश्च → सुप् और तिङ् की विभक्ति

सञ्ज्ञा होती है।

131 न विभक्तौ तुस्माः → विभक्ति के तवर्ग, सकार, मकार की इत् सञ्ज्ञा नहीं होती।

132 एकवचनं सम्बुद्धिः → सम्बोधन में प्रथमा के एकवचन (सु) की सम्बुद्धि सञ्ज्ञा होती है।

रामः

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवद्धातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	राम शब्द कि इस सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा	रामः
प्रत्ययः परश्च सुपः द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने	इन सब सूत्रों कि सहायता से	राम + सु
स्वौजसमौट्छष्टाभ्यांभिस्-ङेभ्यांभ्यस्-ङसिभ्यांभ्यस्-ङसोसाम्-ङ्योस्सुप्	इस सूत्र से प्रथमा के एकवचन में सु प्रत्यय अनुबन्ध लोप करने पर	राम + स्

विरामोऽवसानम्	राम की अवसान संज्ञा	
स-सजुषो रुः	स् को रु	राम + रु
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रु को विसर्ग करने पर	रामः
		इति सिद्धं

रामौ

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः	राम शब्द की	राम राम
प्रातिपदिकं	इस सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा	
ङ्याप्-प्रातिपदिकात्	इन	
प्रत्ययः	सब सूत्रों	
परश्च	कि	
सुपः	सहायता	
द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने	से	
स्वौजस . . . . सुप्	इस सूत्र कि से प्रथमा के द्विवचन मे औ प्रत्यय	रामराम + औ
विभक्तिश्च	विभक्ति संज्ञा	
सरूपाणामेकशेष	केवल एक पद रहने पर	राम + औ

प्रथमयोः पूर्वसवर्णः	अक् को दीर्घ आदेश था	
नादिचि	इस सूत्र से निषेध हुआ	
वृद्धिरेचि	अकार-औकार को वृद्धि	रामौ
	रूप औकार एकादेश।	इति सिद्धं

रामाः

सूत्र	कार्य	स्थिती
अर्थवदधातुरप्रत्ययः	राम शब्द की	राम राम राम
प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से प्रातिपदिकसंज्ञा	
प्रत्ययः	इन सब	
परश्च	सूत्रों की	
सुपः	सहायता	
बहुषु बहुवचनं	से	
स्वौजसमौट्छष्टा......।	इस सूत्र से प्रथमा	
	के बहुवचन में जस् प्रत्यय	राम+जस्
चुटू	ज् की इत्सञ्ज्ञा	
तस्य लोपः	ज् का लोप	राम+अस्
प्रथमयोः पूर्वसवर्णः	पूर्वसवर्ण को दीर्घ	रामा+अस्
हलन्त्यम्	स का लोप प्राप्त था	

न विभक्तौ तुस्माः	स का लोप निषेध	रामास्
स-सजुषो रुः	अनुबन्धलोप करने पर स् को रु	रामारु
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	रामाः इति सिद्धं

रामम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	राम शब्द की इस सूत्र से प्रातिपदिक सञ्ज्ञा	
प्रत्ययः परश्च स्वौजस्...	इस सब सूत्रों कि	
[illegible] द्व्येकयोर्द्विवचनैक-वचने	सहायता से	
स्वौजसमौट्छस्टा —	इस सूत्र से प्रथमा के एकवचन में अम् प्रत्यय	राम अम्

अकः सवर्णे दीर्घः	इस सूत्र से दीर्घ प्राप्त था, उसे रोककर	
अमि पूर्वः	इस सूत्र से अम् को पूर्व रूप अकार एकादेश	रामम्
	रामौ	

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	राम शब्द की इस सूत्र से प्रातिपदिक सञ्ज्ञा	
प्रत्ययः परश्च सुपः द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने	इन सब सूत्रों कि सहायता से	
~~[illegible]~~स्वौजसमौट् —	इस सूत्र से द्वितीया ~~[illegible]~~ के द्विवचन में औट् प्रत्यय	राम+औट्
हलन्त्यम्	अन्तिम हल् की इत्संज्ञा	
तस्य लोपः	इत्संज्ञक हल् का लोप	राम+औ
प्रथमयोः पूर्वसवर्णः	अक् को दीर्घ आदेश था।	

नादिचि वृद्धिरेचि	इस सूत्र से निषेध हुआ अकार - औकार को वृद्धि औकार एकादेश	रामौ इति सिद्धं

रामान्

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	राम शब्द की इस सूत्र से प्रातिपदिक सञ्ज्ञा	
प्रत्ययः परश्च सुपः ~~[illegible]~~ बहुषु बहुवचनम्	इन सूत्रों कि सहायता से	
स्वौजसमौट्छष्टा...	इस सूत्र से द्वितीया के बहुवचन मे शस् प्रत्यय	राम+शस्
लशक्वतद्धिते	श् की इत्सञ्ज्ञा	
तस्य लोपः	श् का लोप	राम+अस्
प्रथमयोः पूर्वसवर्णः	पूर्व सवर्ण दीर्घ	रामा+अस्
तस्माच्छसो नः पुंसि	अस् के स को न	रामान्
अट्-कु-प्वाङ्-नुम्-व्यवायेऽपि	इस सूत्र से न को ण	

पदान्तस्य	प्राप्त था। इससूत्र ने पद के अन्तिम न को ण् करने का निषेध रामेण	रामान् इति सिद्ध

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं प्रत्ययः परश्च सुपः द्वयेकयोर्द्विवचनैकवचने स्वौजसमौट्छष्टा----।	राम शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा इन सब सूत्रों कि सहायता से इस सूत्र से तृतीया के एकवचन में टा प्रत्यय	राम+टा
टा-ङसि-ङसामिनात्स्याः	टा के स्थान पर इन आदेश	राम+इन
आद्गुणः	अकार और इकार को एकार गुण एकादेश	रामेन

अट्-कु-प्वाङ्-नुम्-व्यवायेऽपि	न को ण करने पर	रामेण इति सिद्धं

रामाभ्याम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	राम शब्द की इस सूत्र से प्रातिपदिक सञ्ज्ञा	
प्रत्ययः परश्च सुपः द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने	इन सब सूत्रों कि सहायता से	
स्वौजस - - - - ।	इस सूत्र से तृतीया, चतुर्थी, पंचमी के द्विवचन में भ्याम् प्रत्यय	राम+भ्याम्
सुपि च	अदन्त अङ्ग को दीर्घ	रामाभ्याम् इति सिद्धं

रामैः

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः	राम शब्द की इस सूत्र से	

प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक सञ्ज्ञा	
प्रत्ययः	इन सब	
परश्च	सूत्रों	
सुपः	कि	
बहुषु बहुवचनम्	सहायता से	
स्वौजस ---	इस सूत्र से तृतीया के बहुवचन में भिस प्रत्यय	राम + भिस
अतो भिस ऐस्	भिस के स्थान पर ऐस् आदेश	राम + ऐस्
वृद्धिरेचि	वृद्धि करने पर	रामैस
ससजुषो रुः	स को रु अनुबन्ध लोप करने पर	रामैर्
खरवसानयोर्विसर्जनीय	रेफ को विसर्ग	रामैः इति सिद्धं

रामाय

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः	रामशब्द की प्रातिपदिक	

प्रातिपदिक	संज्ञा	
प्रत्ययः	इन सब	
परश्च	सूत्रों	
सुपः	कि	
ङसेर्यमो ह्रिविभक्तौ	सहायता से	
स्वौजसमौ - - - - ।	इस सूत्र से चतुर्थी के	राम+ङे
	एकवचन में ङे	
	प्रत्यय	
[illegible]	[illegible]	[illegible]
नशकवतद्धिते	इत संज्ञा प्राप्त थी	
ङेर्यः	इस सूत्र से ङे के	राम+य
	स्थान पर ङे आदेश	
स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ	इस सूत्र के स्थान में	
	हुआ 'य' आदेश स्थानी	
	अर्थात् ङे (सुप्) के	
	समान ही होगा, अतः	
सुपि च	अदन्त अङ्ग को दीर्घ	रामाय
		इति सिद्धं

रामेभ्यः

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	राम शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
प्रत्ययः परश्च	इन सब सूत्रों कि	
बहुषु बहुवचनं सुपः	सहायता से	
स्वौजसमौट्छ	इत्यादि इस सूत्र से चतुर्थी पञ्चमी के बहुवचन में भ्यस् प्रत्यय	राम+भ्यस्
बहुवचने झल्येत्	अदन्त अंग को एकार आदेश	रामे+भ्यस्
स-सजुषो रुः खरवसानयोर्विसर्जनीयः	स् को र् रेफ को विसर्ग	रामेभ्यर् रामेभ्यः इति सिद्धं

रामात्

सूत्र	कार्य	स्थिति
	राम शब्द की	

अर्थवदधातुरप्रत्ययः	इस सूत्र की प्रातिपदिक संज्ञा	
प्रातिपदिकं		
प्रत्ययः	इन सब सूत्रों	
परश्च	कि	
सुपः		
द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने	सहायता से	
स्वौजसमौट्छष्टा	इत्यादि सूत्र से	राम + ङसि
	पंचमी के एकवचन	
	में ङसि प्रत्यय	
लशक्वतद्धिते	इत्संज्ञा प्राप्त थी	
	उसे रोक कर	
टाङसिङसामिनात्स्याः	ङसि के स्थान आत्	राम + आत
~~स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ~~	स्थानी के स्थान में	
	हुआ आत् आदेश	
	स्थानी के समान है, अतः	
~~सुपि च~~	अदन्त अङ्ग को दीर्घ	रामात्
वाऽवसाने	विकल्प से त् को द् हुआ	रामाद्
		इति रूप

रामस्य

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं प्रत्ययः परश्च सुपः द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने स्वौजसमौट्छष्टा	राम शब्द की इस सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा इन सब सूत्रों की सहायता से इत्यादि सूत्र से षष्ठि के एकवचन में ङस प्रत्यय	राम + ङस
लशक्वतद्धिते	ङ् (कवर्ग) की इत्संज्ञा थी। उसे रोक कर	
टा-ङसि-ङसामिनात्स्याः	ङस के स्थान पर स्य आदेश	राम + स्य रामस्य इति सिद्धं

रामयोः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	राम शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	इस सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा	
प्रत्ययः	इन	
परश्च	सब	
सुपः	सूत्रों कि	
द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने	सहायता से	
स्वौजसमौटछस्टा	इत्यादि सूत्र से षष्ठि, सप्तमी के द्विवचन में ओस् प्रत्यय	राम+ओस्
ओसि च	ओस् परे रहते एकार	रामे+ओस्
एचोऽयवायावः	ए को अय् संयुक्त करने पर	राम+अय्+ओस् रामयोस्
ससजुषो रुः	स् को रु	रामयोरु
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	र् को विसर्ग	रामयोः इति सिद्धं

रामाणाम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
	राम शब्द को	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः	इस सूत्र से	
प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
प्रत्ययः	इन सब	
परश्च	सूत्रों	
सुपः	कि	
बहुषु बहुवचनं	सहायता से	
स्वौजसमौट्छस्टा	इत्यादि सूत्र से षष्ठि के	राम+आम्
	बहुवचन में आम् प्रत्यय	
ह्रस्वनद्यापो नुट्	आम् को नुट् अनुबन्ध	राम न्+आम्
	लोप करने पर न्	
नामि	अजन्त अंग को दीर्घ	रामानाम्
अट्-कु-प्वाङ्नुम् व्यवायेऽपि	न् को ण्	रामाणम्
		इति सिद्धं

रामे

सूत्र	कार्य	स्थिति
	राम शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः	इस सूत्र से	
प्रातिपदिक	प्रातिपदिक संज्ञा	
प्रत्ययः	इन	
परश्च	सन	
सुपः	सूत्रों की	
द्वयेकयोर्द्विवचनैकवचने	सहायता से	
स्वौजसमौट्छष्टा	इत्यादि सूत्र से	राम+ङि
	सप्तमी के एकवचन	
	में ङि प्रत्यय	
लशक्वतद्धिते	ङ् (कवर्ग) की इत्संज्ञा	
तस्य लोपः	इत्संज्ञक का लोप	राम+इ
आद्गुणः	अकार-इकार को	रामे इति सिद्धं
	एक देश एकादेश	

रामेषु

सूत्र	कार्य	स्थिति
	राम शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः	इस सूत्र से	
प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
प्रत्ययः	इन सब	
परश्च	सूत्रों	
सुपः	कि	
बहुषु बहुवचनं	सहायता से	
स्वौजसमौट्छष्टा	इत्यादि सूत्र से	राम + सुप्
	सप्तमी के बहुवचन में	
	सुप् प्रत्यय	
हलन्त्यम्	अन्तिम हल् की इत्संज्ञा	
तस्य लोपः	इत्संज्ञक का लोप	रामसु
बहुवचने झल्येत्	अदन्त अंग को एकार	रामेसु
आदेश प्रत्ययोः	सकार को षकार	रामेषु
		इति सिद्धं

१३३ यस्मात् प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम्
=> जो प्रत्यय जिससे किया जाय, तदादि शब्द स्वरूप की उस प्रत्यय के परे रहते अङ्ग सञ्ज्ञा होती है।

१३४ एङ् ह्रस्वात् सम्बुद्धेः = एङन्त ह्रस्वान्त अङ्ग से परे सम्बुद्धि के हल् का लोप होता है।

१३५ अमि पूर्वः = अक् से अम् सम्बन्धी अच् परे रहते पूर्वरूप होता है।

१३६ लशक्वतद्धिते = तद्धित को छोड़कर प्रत्यय के आदि लकार, शकार और कवर्ग की इत्संज्ञा होती है।

१३७ तस्माच्छसो नः पुंसि = पूर्वसवर्ण दीर्घ से परे शस् के सकार को नकार आदेश होता है।

१३८ अट् - कु - प्वाङ् - नुम् - व्यवायेऽपि = अट्,
कवर्ग, पवर्ग, आङ्, नुम् इनका पृथक् २
या जितनों का सह-सम्भव हो उनका
व्यवधान होने पर भी रेफ षकार से परे
नकार को णकार होता है, समान पद में।

१३९ पदान्तस्य = पदान्त के न को ण नहीं होता

१४० टा - ङसि - ङसामिनात्स्याः = अदन्त अंग
से परे टा, ङसि, ङस् के स्थान में क्रम से
इन, आत्, स्य आदेश होते हैं।

१४१ सुपि च = यञादि सुप् परे रहते अदन्त अंग
को दीर्घ होता है।

१४२ अतो भिस ऐस् = अदन्त अंग से परे भिस्
के स्थान में ऐस् आदेश होता है।

१४३ ङेर्यः = अदन्त अङ्ग से परे ङे के स्थान में
य आदेश होता है।

१४४ स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ = आदेश स्थानिवत् होता है परन्तु स्थानी सम्बन्धी जो अल्, तदाश्रयविधि कर्त्तव्य हो तो स्थानिवद्भाव नहीं होता।

१४५ बहुवचने झल्येत् = झलादि बहुवचन सुप् परे रहते अदन्त अङ्ग को एकार आदेश होता है।

१४६ वाऽवसाने = अवसान में (अन्त में) झलों के स्थान में चर् होते हैं विकल्प से।

१४७ ओसि च = ओस् परे रहते अदन्त अङ्ग को एकार आदेश होता है।

१४८ ह्रस्वनद्यापो नुट् = ह्रस्वान्त नद्यन्त और आबन्त अङ्ग से परे अम् को नुट् का आगम होता है।

१४९ नामि = नाम् परे रहते अजन्त अङ्ग को दीर्घ होता है।

१५० आदेश प्रत्यययोः = इण् कवर्ग से परे अपदान्त आदेशरूप और प्रत्ययावयव सकार को षकार आदेश होता है।

१५१ सर्वादीनि सर्वनामानि = सर्वादि शब्द स्वरूप सर्वनाम संज्ञक होते हैं।

१५२ जसः शी = अदन्त सर्वनाम से परे जस् को शी आदेश होता है।

१५३ सर्वनाम्नः स्मै = अदन्त सर्वनाम से परे

ङे को स्मै आदेश होता है।

१५४ ङसि-ङ्योः स्मात् स्मिनौ = अदन्त सर्वनाम से पर ङसि ङि को क्रम से स्मात् और स्मिन् होते हैं।

१५५ आमि सर्वनाम्नः सुट् = अवर्णान्त अङ्ग से पर सर्वनाम से किये गए आम् को सुट् का आगम होता है।

१५६ पूर्वापरवर-दक्षिणोत्तरापराधराणि व्यवस्थायामसं-ज्ञायाम् = पूर्व आदि शब्दों की व्यवस्था में और असंज्ञा में सर्वत्र गणसूत्र से नित्य प्राप्त सर्वनाम संज्ञा जस् विकल्प से होती है। (पूर्वादि शब्दों के अर्थ से अपेक्षित अवधि के नियम को व्यवस्था कहते हैं।

१५७ स्वमज्ञातिधनाख्यायाम् → ज्ञाति धन से अन्य

आत्मा-आत्मीय अर्थ में स्व शब्द की
गणसूत्र से नित्य प्राप्त सर्वनाम संज्ञा
जस् परे रहते विकल्प से होती है।
१५८ अन्तरं बहिर्योगोपसंव्यानयोः → बाह्य और
परिधानीय अर्थ में अन्तर शब्द की गण
सूत्र से प्राप्त नित्य सर्वनाम संज्ञा
जस् परे रहते विकल्प से होती है।
१५९ पूर्वादिभ्यो नवभ्यो वा → पूर्वादि नौ शब्दों
से परे ङसि और ङि को स्मात् और
स्मिन् विकल्प से होते हैं।
१६० प्रथम चरम तयल्पार्ध-कतिपय नेमाश्च =
प्रथम, चरम, तयप्रत्ययान्त और अल्प,
अर्ध, कतिपय, नेम की जस् परे रहते
सर्वनाम संज्ञा विकल्प से होती है।
१६१ जराया जरसन्यतरस्याम् → जरा शब्द को
जरस् आदेश होता है विकल्प से अजादि
विभक्ति परे रहते।
वा० - पदाङ्गाधिकारे तस्य (च) तदन्तस्य च

पदाधिकार और अङ्गाधिकार में जो कार्य ~~किया~~ जिसको कहे गए हैं उसको और वह शब्द जिसके अन्त में हो उसको - दोनों को - होते हैं।

मानस्यादेशा भवन्ति → बताये गए मात्र को आदेश होता है।

एकदेशविकृतमनन्यवदिति → एकदेशविकृत होने पर भी वह अन्य नहीं हो जाता।

१६२ दीर्घाज्जसि च → दीर्घ से जस् और इच् परे रहते पूर्वसवर्ण दीर्घ नहीं होता।

१६३ सुडनपुंसकस्य → नपुंसकलिङ्ग को छोड़कर ~~सु~~ स्वादि पाँच वचनों की सर्वनामस्थान संज्ञा नहीं होती है।

१६४ स्वादिष्वसर्वनामस्थाने → सु से लेकर कप्प्रत्यय पर्यन्त सर्वनामस्थान से भिन्न प्रत्यय परे रहते पूर्व की पदसंज्ञा होती है।

१६५ यचि भम् → सु से लेकर कप्प्रत्यय तक सर्वनामस्थान से भिन्न यकारादि तथा ~~अ~~

अजादि प्रत्यय परे रहते पूर्व की भसंज्ञा होती है।

१६६ आ कडारादेका संज्ञा → कडारा: कर्मधारये' इस सूत्र से पहले एक की एक ही संज्ञा होती है, जो पर और अनवकाश हो।

१६७ आतो धातोः → अकारान्त जो धातु तदन्त भसंज्ञक अङ्ग का लोप होता है।

१६८ जसि च → ह्रस्वान्त अङ्ग को गुण होता है जस् परे रहते।

१६९ ह्रस्वस्य गुणः → ह्रस्वान्त अङ्ग को गुण होता है सम्बुद्धि परे रहते।

१७० शेषो घ्यऽसखि → ह्रस्व इकारान्त उकारान्त शब्दों की घिसंज्ञा होती है सखि शब्द को छोड़कर।

१७१ आङो नाऽस्त्रियाम् → घि संज्ञक से परे आङ् (टा) को ना होता है।

१७२ घेर्ङिति → घि संज्ञक को गुण होता है ङित सुप् परे रहते।

१७३ ङसि ङसोश्च → एङ् से ङसि ङस् सम्बन्धी आकार परे रहते दोनों के स्थान में पूर्वरूप एकादेश होता है।

१७४ अच्च घेः → इकार उकार से परे ङि को औत् और इ को अ आदेश होता है।

१७५ अनङ् सौ → अङ् संज्ञक सखि शब्द को अनङ् होता है सम्बुद्धिभिन्न सु परे रहते।

१७६ अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा → अन्त्य अल् से पूर्व वर्ण की उपधा संज्ञा होती है।

१७७ सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ → नान्त की उपधा को दीर्घ होता है सम्बुद्धिभिन्न सर्वनामस्थान परे रहते।

१७८ अपृक्त एकाल् प्रत्ययः → एक अल् वाले प्रत्यय की अपृक्त संज्ञा होती है।

१७९ हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् → हलन्त से परे सु, ति, सि के अपृक्त हल् का लोप होता है और दीर्घ ङी, आप् से सु के अपृक्त हल् का लोप होता है।

१८० नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य → प्रातिपदिक संज्ञक पद के अन्तिम नकार का लोप होता है।

१८१ सख्युरसम्बुद्धौ → अङ्गसंज्ञक सखि शब्द से परे सम्बुद्धिभिन्न सर्वनाम स्थान णिद्वत् होता है।

१८२ अचो ञ्णिति → अजन्त अङ्ग को वृद्धि होती है ञित् णित प्रत्यय परे रहते।

१८३ ख्यत्यात् परस्य → यण् हो जाने पर ह्रस्व खि ति शब्द और दीर्घ खी ती शब्द से परे ङसि ङस् के अकार को उकार आदेश होता है।

१८४ औत् → इकार उकार से परे ङि के औत् आदेश होता है।

१८५ पतिः समास एव → पति शब्द की समास में घि संज्ञा होती है।

१८६ बहु-गण-वतु-डति संख्या → बहु शब्द गण शब्द वतुप्रत्ययान्त और डतिप्रत्ययान्त की

सङ्ख्या संज्ञा होती है।

१८७ डति च → डति प्रत्ययान्त संख्यावाचक शब्द की षट्संज्ञा होती है।

१८८ षड्भ्यो लुक् → षट्संज्ञक से परे जस्, शस् का लुक् होता है।

१८९ प्रत्ययस्य लुक्-श्लु-लुपः → ~~षट्संज्ञक से परे~~ लुक्, श्लु, लुप इन शब्दों से किया गया जो प्रत्यय का अदर्शन, उसकी क्रम से लुक्, श्लु, लुप् संज्ञा होती है।

१९० प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम् → प्रत्यय के लोप होने पर भी तदाश्रित कार्य होता है।

१९१ न लुमताऽङ्गस्य → लुक्, श्लु, लुप् शब्दों से जहाँ लोप हुआ हो वहाँ तन्निमित्तक अङ्ग कार्य नहीं होता।

१९२ त्रेस्त्रयः → त्रि शब्द को त्रय आदेश होता है, आम् परे रहते।

१९३ त्यदादीनामः → त्यदादियों को अकार अन्तादेश होता है विभक्ति परे रहते (द्वि

शब्द तक)।

१६४ भू स्त्र्याख्यौ नदी → अम्बार्थक और नदी संज्ञक को ह्रस्व होता है सम्बुद्धि परे रहते।

१६५ आण्नद्याः → नद्यन्त से परे ङित्वचनों को आट् का आगम होता है।

१६६ ङेराम्नद्याम्नीभ्यः → आट् से अच् परे रहते वृद्धि एकादेश होता है।

१६७ अचि श्नु-धातु भ्रुवां य्वोरियङुवङौ →

[illegible] वा० - प्रथमलिङ्गग्रहणं च → जो शब्द पहले नित्य स्त्रीलिंग हो वह उपसर्जन होने से अन्यलिंग में भी नदीसंज्ञक होता है।

१६५ अम्बार्थनद्योर्ह्रस्वः → अम्बार्थक और नदी संज्ञक को ह्रस्व होता है सम्बुद्धि परे रहते।

१६६ आण्नद्याः → नद्यन्त से परे ङित्वचनों को आट् का आगम होता है।

१६७ आटश्च → आट् से अच् परे रहते वृद्धि

एकादेश होता है।

१९८ ङेराम्नद्याम्नीभ्यः → नद्यन्त, आबन्त और नी शब्द से परे ङि को आम् आदेश होता है।

१९९ अचि श्नु-धातु-भ्रुवां य्वोरियङुवङौ → श्नु प्रत्ययान्त, इवर्णान्त, उवर्णान्त, जो धातु और "भ्रू" अंग को इयङ्, उवङ् आदेश होता है अजादि प्रत्यय परे रहते।

२०० एरनेकाचोऽसंयोगपूर्वस्य → धातु के अवयवों का संयोग नहीं है पूर्व में जिसके ऐसा जो इवर्ण, उवर्ण, तदन्त जो धातु, तदन्त जो अनेकाच् अङ्ग उसको यण् होता है अजादि प्रत्यय परे रहते।

२०१ गतिश्च → प्रादियों की क्रिया के योग में गति संज्ञा होती है।

वा० - गतिकारकेतरपूर्वपदस्य यण् नेष्यते → गति कारक से इतर पूर्वपद हो तो यण् नहीं होता।

२०२ न भूसुधियोः → भू और सुधी को यण्

नहीं होता, अजादि सुप् परे रहते।
२०३ तृज्वत् क्रोष्टुः → क्रोष्टु शब्द को
तृज्वद्भाव होता है, सम्बुद्धि भिन्न सर्वनाम
स्थान परे रहते।
२०४ ऋतो ङि-सर्वनामस्थानयोः → ऋदन्त
अङ्ग को गुण होता है ङि और सर्वनाम
स्थान परे रहते।
२०५ ऋदुशनस्पुरुदंसोऽनेहसां च → ऋदन्त,
और उशनस् आदि को अनङ् आदेश
होता है सम्बुद्धिभिन्न सु परे रहते।
२०६ अप्तृन्-तृच्-स्वसृ-नप्तृ-नेष्टृ-त्वष्टृ-
क्षत्तृ-होतृ-पोतृ-प्रशास्तॄणाम् → अप्
आदियों की उपधा को दीर्घ होता है
सम्बुद्धि भिन्न सर्वनामस्थान परे रहते।
२०७ विभाषा तृतीयादिष्वचि → क्रोष्टु शब्द को
तृज्वद्भाव होता है विकल्प से, अजादि
तृतीयादि विभक्ति परे रहते।
२०८ ऋत उत् → ऋदन्त अङ्ग से ङसि ङस्

सम्बन्धी अकार परे रहते पूर्व पर के स्थान में उकार आदेश होता है।

२०६ रात् सस्य → रेफ से परे संयोगान्त लोप केवल स का ही होता है अन्य का नहीं।

२१० ~~अचि श्नुधातु~~ वा० → नुमचिरतृज्वद्भावेभ्यो नुट् पूर्वविप्रतिषेधेन – नुम्, अच् परे रहते रभाव और तृज्वद्भाव इनकी अपेक्षा पूर्वविप्रतिषेध से नुट् ही होता है।

२१० ओः सुपि → धातु के अवयवों का संयोग पूर्व में नहीं है जिसके ऐसा जो उवर्ण, तदन्त जो धातु, तदन्त जो अनेकाच् अङ्ग, उसको यण होता है अजादि सुप् परे रहते।

२११ वर्षाभ्वश्च → वर्षाभू शब्द के अवयव उवर्ण के स्थान में यण होता है अजादि सुप् परे रहते।

~~वा० – दृवर्णाश्रयस्य णत्वं वाच्यम्~~ →

वा० – दृन्-कर-पुनः पूर्वस्य भुवो यण् वक्तव्यः → दृन्‌करपुनः पूर्वक भू के उवर्ण को यण होता

है अजादि सुप् परे रहते।
ऋवर्णान्नस्य णत्वं वाच्यम् → ऋवर्ण से परे भी न को ण होता है।

२१२ नृ च → नृ को दीर्घ होता है विकल्प करके नाम् परे रहते।

२१३ गोतो णित् → ओकार से विहित सर्वनामस्थान णिद्वत् होता है।

२१४ औतोऽम् शसोः → ओकार से अम् शस् सम्बन्धी अच् परे रहते पूर्व पर के स्थान में अकार एकादेश होता है।

२१५ रायो हलि → रैशब्द को आकार अन्तादेश होता है हलादि विभक्ति परे रहते।

इ रजन्ताः पुल्लिंगाः

राम शब्द →

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रामः	रामौ	रामाः
द्वितीया	रामम्	,,	रामान्
तृतीया	रामेण	रामाभ्याम्	रामैः

चतुर्थी	रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
पञ्चमी	रामात्-द्	,,	,,
षष्ठी	रामस्य	रामयोः	रामाणाम्
सप्तमी	रामे	,,	रामेषु
सम्बोधन	हे राम	हे रामौ	हे रामाः

सर्वः

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	सर्व शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्	इत्यादि सूत्र से प्रथमा के एकवचन में सु प्रत्यय	सर्व + सु
	अनुबन्धलोप करने पर	सर्व + स्
स-सजुषो रुः	स् को रु	सर्वर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	सर्वः इति सिद्धं

सर्वौ

सूत्र	कार्य	स्थिति
	सर्व शब्द की	

अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के	
	द्विवचन में औ प्रत्यय	सर्व+औ
प्रथमयोः पूर्वसवर्णः	पूर्वसवर्ण दीर्घ प्राप्त	
	था। ~~[illegible]~~	
नादिचि	पूर्वसवर्ण दीर्घ निषेध	सर्व+औ
वृद्धिरेचि	वृद्धि करने पर	सर्वौ
		इति सिद्ध

<u>सर्वे</u>

सूत्र	कार्य	स्थिति
	सर्व शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के	
	बहुवचन में जस् प्रत्यय	सर्व+जस्
चुटू	इत्संज्ञा प्राप्त थी, उसे	
	रोक कर	
सर्वादीनि सर्वनामानि	सर्वनाम संज्ञा	
जसः शी	जस् को शी आदेश	सर्व शी

~~स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ~~	~~जस के स्थान पर परहुआ शी आदेश स्थानी के ही समान है अतः~~	
लशक्वतद्धिते	शकार की इत्संज्ञा	
तस्य लोपः	इत्संज्ञक का लोप	सर्व + ई
आद्गुणः	'ए' गुण करने पर	सर्वे इति सिद्धं

सर्वम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
	सर्व शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययःप्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस ......इत्यादि	सूत्र से द्वितीया के एकवचन में अम् प्रत्यय	सर्व + अम्
अकः सवर्णे दीर्घः	दीर्घ प्राप्त था। उसे रोककर	
अमि पूर्वः	पूर्वरूप एकादेश	सर्वम् इति सिद्धं

सर्वौ

सूत्र	कार्य	स्थिति

	सर्व शब्द को	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस .... इत्यादि	सूत्र से द्वितीया के	
	द्विवचन औट् प्रत्यय	सर्व + औट्
	अनुबन्धलोप करने पर	सर्व + औ
प्रथमयोः पूर्वसवर्णः	पूर्वसवर्ण दीर्घ प्राप्त था	
नादिचि	इस सूत्र से निषेध	सर्व औ
वृद्धिरेचि	वृद्धि करने पर	सर्वौ इति सिद्धम्
	सर्वान्	

सूत्र	कार्य	स्थिति
	सर्व शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस ..... इत्यादि	सूत्र से द्वितीया के	
	बहुवचन में शस्	सर्व+शस्
	प्रत्यय	
लशक्वतद्धिते	शकार की इत्संज्ञा	
तस्य लोपः	इत्संज्ञक का लोप	सर्व + अस्
प्रथमयोः पूर्वसवर्णः	पूर्वसवर्ण दीर्घ एकादेश	सर्वास्

तस्मात् शसोनः पुंसि सकार को नकार सर्वान् ~~[illegible]~~
अट्-कुप्वाङ्नुम्-व्यवायेऽपि ~~[illegible]~~ न् को ण् प्राप्त था
पदान्तस्य इस सूत्र से निषेध हुआ सर्वान् इति सिद्ध

सर्वेण

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	सर्व शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस... इत्यादि	सूत्र से तृतीया के एकवचन में टा प्रत्यय	सर्व टा
~~चुटू~~ / ~~तस्य लोपः~~	~~टवर्ग कि इत्संज्ञा~~ / ~~इत्संज्ञक का लोप~~	~~सर्व आ~~
चुटू	इत्संज्ञा प्राप्त थी, उसे रोक कर	
टा-ङसि-ङसामिनात्स्याः	टा के स्थान पर इन आदेश	सर्व इन
आद्गुणः	गुण करने पर	सर्वेन
~~स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ~~	~~स्थानी (टा) के स्थान~~ पर	

	~~हुआ इन आदेश स्थानी के समान हैं, अतः~~	
अट्-कु-प्वाङ्-नुम्-व्यवायेऽपि	नकार को णकार	सर्वेण इति सिद्धं

सर्वाभ्याम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	सर्व शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस ... इत्यादि	सूत्र से तृतीया के द्विवचन में भ्याम् प्रत्यय	सर्व+भ्यां
सुपि च	अदन्त अङ्ग दीर्घ	सर्वाभ्यां इति सिद्धं

सर्वैः

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	सर्व शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस ... इत्यादि	सूत्र से तृतीया के बहुवचन में भिस् प्रत्यय	सर्व+भिस्

सूत्र	कार्य	स्थिति
अतो भिस ऐस्	भिस् के स्थान पर ऐस्	सर्व + ऐस्
वृद्धिरेचि	वृद्धि करने पर	सर्वैस्
स-सजुषो रुः	स् को रु अनुबन्धलोप करने पर	सर्वैर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	सर्वैः इति सिद्धं

सर्वस्मै

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवद्धातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	सर्व शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस ...... इत्यादि	सूत्र से चतुर्थी के एकवचन में ङे प्रत्यय	सर्व+ङे
सर्वनाम्नः स्मै	ङे को स्मै आदेश	सर्व+स्मै
सर्वादीनि सर्वनामानि	सर्वनाम संज्ञा	=सर्वस्मै इतिसिद्धं

सर्वेभ्यः

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवद्धातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	सर्व शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस ..... इत्यादि	सूत्रसे चतुर्थी के	

✓

	बहुवचन में भ्यस् प्रत्यय	सर्व+भ्यस्
बहुवचने झल्येत्	अदन्त अङ्ग को एकार आदेश	सर्वे+भ्यस्
स-सजुषो रुः	स् को रु, अनुबन्धलोप करने पर	सर्वेभ्यर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	सर्वेभ्यः
		इति सिद्धं

सर्वस्मात्

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	सर्व शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ......इत्यादि	सूत्र से पञ्चमी के एकवचन में ङसि प्रत्यय	सर्व+ङसि
सर्वादीनि सर्वनामानि	सर्वनाम संज्ञा	
ङसि-ङ्योः स्मात्स्मिनौ	ङसि के स्थान पर स्मात् आदेश	सर्व+स्मात् = सर्वस्मात् इति सिद्धं

सर्वस्य

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	सर्व शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	

सूत्र	कार्य	स्थिति
स्वौजस	इत्यादि सूत्र से षष्ठी के एकवचन में ङस प्रत्यय	सर्व+ङस्
लशक्वतद्धिते	इत्संज्ञा प्राप्त थी। उसे रोककर	
टा ङसि ङसामिनात्स्याः	ङस् के स्थान पर स्य आदेश	सर्वस्य
		इति सिद्धं

सर्वयोः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	सर्व शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस ....इत्यादि	सूत्र से षष्ठी के द्विवचन में ओस् प्रत्यय	सर्व+ओस्
वृद्धिरेचि	वृद्धि प्राप्त थी, उसे रोककर	
ओसि च	अदन्त अंग को एकार आदेश	सर्वे+ओस्
एचोऽयवायावः	एको अय् आदेश	सर्वय् ओस्
स-सजुषो रुः	स् को रु	सर्वयोर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	सर्वयोः
		इति सिद्धं

सर्वेषाम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवद्धातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	सर्व शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस ..... इत्यादि	सूत्र से षष्ठी के बहुवचन में आम् प्रत्यय	सर्व+आम्
अकः सवर्णे दीर्घः	दीर्घ प्राप्त था, उसे रोकना	
आमि सर्वनाम्नः सुट्	सुट् का आगम	सर्वस्आम्
बहुवचने झल्येत्	अदन्त अंग को एकारआदेश	सर्वेसाम्
आदेश प्रत्ययोः	सकार को षकार	सर्वेषाम्
		इति सिद्धं

सर्वस्मिन्

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवद्धातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	सर्वशब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस ...... इत्यादि	सूत्र से सप्तमी के एकवचन में ङि प्रत्यय	सर्व+ङि
सर्वादीनि सर्वनामानि	सर्वनाम संज्ञा	

ङसि - ङसोः स्मात् - स्मिनौ ङि को स्मिन् आदेश सर्वस्मिन्

सर्वस्मिन्
इति सिद्धं

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वः	सर्वौ	सर्वे
द्वितीया	सर्वम्	"	सर्वान्
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्यां	सर्वैः
चतुर्थी	सर्वस्मै	"	सर्वेभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्मात्	"	"
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	"	सर्वेषु

निर्जर शब्द

निर्जरः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	निर्जर शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः...	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्	इत्यादि सूत्र से प्रथमा के एकवचन में सु प्रत्यय, अनुबन्धलोप करने पर	निर्जर + स्

X

ससजुषोरुः	स् को रु, अनुबन्धलोप करने पर	निर्जर र्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	निर्जरः

निर्जरसौ, निर्जरौ

सूत्र	कार्य	स्थिति
	निर्जर शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस ..... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के द्विवचन	
	में औ प्रत्यय	निर्जर+औ
जराया जरसन्यतरस्याम्	अजादि विभक्ति परे रहते	निर्जरस्+औ
	जरस् आदेश विकल्प से	
	संयुक्त करने पर	निर्जरसौ
		इति सिद्धं
	अभाव पक्ष में	निर्जर+औ
प्रथमयोः पूर्वसवर्णः	पूर्वसवर्ण दीर्घ प्राप्त था।	
नादिचि	इस सूत्र से निषेध हुआ	
वृद्धिरेचि	वृद्धि करने पर	निर्जरौ।

निर्जरसः, निर्जराः

सूत्र	कार्य	स्थिति

X

निर्जर शब्द की

अर्थवद्धातुरप्रत्ययःप्रातिपदिकम्	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्...... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के बहुवचन में जस् प्रत्यय	निर्जर + जस्
चुटू	ज (चवर्ग) की इत्संज्ञा	
तस्य लोपः	इत्संज्ञक का लोप	निर्जर + अस्
जराया जरसन्यतरस्याम्	विकल्प से जर को जरस्	निर्जरस् अस्
ससजुषो रुः	स् को रु, अनुबन्ध लोप करने पर	निर्जरसर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	निर्जरसः
	अभाव पक्ष में	निर्जर + अस्
प्रथमयोः पूर्वसवर्णः	पूर्वसवर्ण दीर्घ एकादेश।	निर्जरास्
ससजुषो रुः	स् को रु, अनुबन्ध लोप करने पर	निर्जरार्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	निर्जराः
		इति सिद्ध

निर्जरसम्, निर्जरम्

सूत्र	कार्य	स्थिति

सूत्र	कार्य	स्थिति
	निर्जर शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्राति पदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से द्वितीया के	
	एकवचन में अम् प्रत्यय	निर्जर+अम्
जराया जरसन्यतरस्याम्	विकल्प से जर को जरस्	
	आदेश	निर्जरस् अम्
	संयुक्त करने पर	निर्जरसम्
	अभाव पक्ष में	निर्जर+अम्
अमि पूर्वः	पूर्वरूप करने पर	निर्जरम्
		इति सिद्धं

निर्जरसौ, निर्जरौ

सूत्र	कार्य	स्थिति
	निर्जर शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्राति पदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से द्वितीया के द्विवचन	
	[illegible] में औट् प्रत्यय	
	अनुबन्ध लोप करने पर	निर्जर+औ
जराया जरसन्यतरस्याम्	जर को जरस् आदेश	निर्जरस् औ

	संयुक्त करने पर	निर्जरसौ
	अभाव पक्ष में	निर्जर+औ
प्रथमयोः पूर्वसवर्णः	पूर्वसवर्ण दीर्घ प्राप्त था।	
नादिचि	इस सूत्र से निषेध हुआ	निर्जर+औ
वृद्धिरेचि	अकार-औकार को औकार	
	वृद्धि करने पर	निर्जरौ इतिसिद्ध
	निर्जरसः, निर्जराः	
सूत्र	कार्य	स्थिति
	निर्जर शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् .... इत्यादि	सूत्र से द्वितीया के	
	द्विवचन में शस् प्रत्यय	निर्जर+शस्
लशक्वतद्धिते	शकार की इत्संज्ञा	
तस्य लोपः	इत्संज्ञक का लोप	निर्जर+अस्
जराया जरसन्यतरस्याम्	विकल्प से जर को जरस् आदेश	निर्जरस् अस्
	संयुक्त करने पर	निर्जरसस्
ससजुषो रुः	स् को रु, अनुबन्ध	
	लोप करने पर	निर्जरसर्

X

खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	निर्जरसः
	अभाव पक्ष में	निर्जर + अस्
प्रथमयोः पूर्वसवर्णः	पूर्वसवर्ण दीर्घ	निर्जरास्
तस्माच्छसो नः पुंसि	सकार को नकार	निर्जरान्
अट्कुप्वाङ् नुम् व्यवायेऽपि	न को ण होना था	
पदान्तस्य	सूत्र से निषेध हुआ	निर्जरान् इति
	निर्जरसा , निर्जरे	
सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	निर्जर शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ------ इत्यादि	सूत्र से तृतीया के एकवचन में टा प्रत्यय	
	अनुबन्ध लोप करने पर	निर्जर आ
जराया जरसन्यतरस्याम्	जर को जरस् आदेश	निर्जरस् आ
	संयुक्त करने पर	निर्जरसा
	अभाव पक्ष में	निर्जर [illegible]
अकः सवर्णे दीर्घः	दीर्घ करने पर	निर्जरा इति
टाङसिङसामिनात्स्याः	टा को इन आदेश	निर्जर इन

X

आद्गुणः पदान्तस्य	गुण करने पर नर को ण	निर्जरेन निर्जरेण

निर्जरसभ्याम् निर्जराभ्याम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
	निर्जर शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से तृतीया के	
	द्विवचन में भ्याम् प्रत्यय	निर्जर + भ्याम्
जराया जरसन्यतरस्याम्	जर को जरस् आदेश	निर्जरस् भ्याम्
	अभाव पक्ष में	निर्जर + भ्याम्
सुपि च	अदन्त अंग को दीर्घ	निर्जराभ्याम
		इति सिद्धं

निर्जराभ्यां

सूत्र	कार्य	स्थिति
	निर्जर शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् .... इत्यादि	सूत्र से तृतीया के	
	द्विवचन में भ्यां प्रत्यय	निर्जर भ्यां
सुपि च	अदन्त अंग को दीर्घ	निर्जराभ्यां
		इति सिद्धं

X

निर्जरैः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	निर्जर शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस.......इत्यादि	सूत्र से तृतीया के	
	बहुवचन में भिस् प्रत्यय	निर्जर+भिस्
अतो भिस् ऐस्	भिस को ऐस् आदेश	निर्जरऐस्
	संयुक्त करने पर	निर्जरैस्
स-सजुषो रुः	स को रु। अनुबन्ध	
	लोप करने पर	निर्जरैर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	निर्जरैः
		इति सिद्ध

निर्जरसे, निर्जराय

सूत्र	कार्य	स्थिति
	निर्जरशब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस..इत्यादि	सूत्र से चतुर्थी के	
	एकवचन में ङे प्रत्यय	निर्जर ङे

	अनुबन्ध लोप करने पर	निर्जर ए
तरायाजरसन्यतरस्याम्	विकल्प से जर को जरस् आदेश	निर्जरस् ए
		= निर्जरसे
	अभाव पक्ष में	निर्जर ङे
ङेर्यः	ङे के स्थान पर 'य' आदेश	निर्जर य
स्थानिवदादेशोऽनल्-विधौ	स्थानी (ङे) के स्थान पर हुआ आदेश स्थानी के समान है, अतः	
सुपि च	अदन्त अंग को दीर्घ	निर्जराय
		इति रूपसिद्धि

निर्जरेभ्यः

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	निर्जर शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस ......इत्यादि	सूत्र से चतुर्थी के बहुवचन में भ्यस् प्रत्यय	निर्जर + भ्यस्
बहुवचने झल्येत्	अदन्त अंग को एकार आदेश	निर्जरेभ्यस्

X

ससजुषो रुः	स् को रु, अनुबन्धलोप करने पर	निर्जरेभ्यर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	निर्जरेभ्यः
		इति सिद्धं

निर्जरसः, निर्जरात्

सूत्र	कार्य	स्थिति
	निर्जर शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्....इत्यादि	सूत्र से पञ्चमी के	
	एकवचन में ङसि प्रत्यय अनुबन्ध लोप करने पर	निर्जर ङसि निर्जर अस्
जराया जरसन्यतरस्याम्	विकल्प से जर को	
	जरस् आदेश	निर्जरस् अस्
ससजुषो रुः	स् को रु, अनुबन्ध	
	लोप करने पर	निर्जरसर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	निर्जरसः
	अभाव पक्ष में	निर्जर+ङसि
टा-ङसि-ङसामिनात्स्याः	ङसि को आत् आदेश	निर्जर आत्
अकः सवर्णे दीर्घः	दीर्घ करने पर	निर्जरात्
		इति सिद्धं

Tuk ×

निर्जरसः , निर्जरस्य

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	निर्जर शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्...... इत्यादि	सूत्र से षष्ठी के एकवचन में ङस प्रत्यय	निर्जर ङस
	अनुबन्धलोप करने पर	= निर्जर अस
राया जरसन्यतरस्यां	विकल्प से जर को जरस् आदेश	निर्जरस् अस
ससजुषो रुः	स को रु, अनुबन्ध लोप करने पर	निर्जरसर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	निर्जरसः
	अभाव पक्ष में	निर्जर ङस्
टा-ङसिङसामिनात्स्याः	ङस् के स्थान पर स्य आदेश	निर्जर स्य
		इति सिद्धं

निर्जरसोः, निर्जरयोः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	निर्जर शब्द की	

अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस ....इत्यादि	सूत्र से षष्ठी के द्विवचन में ओस् प्रत्यय	निर्जर+ओस्
जराया जरसन्यतरस्यां	विकल्प से जर को जरस् आदेश	निर्जरस्+ओस्
ससजुषो रुः	स को रु अनुबन्ध लोप करने पर	निर्जरसोर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	निर्जरसोः
	अभाव पक्ष में	निर्जर+ओस्
ओसि च	अकार को एकार	निर्जरे+ओस्
एचोऽयवायावः	ए को अय् आदेश	निर्जरयोस्
ससजुषो रुः	स को रु अनुबन्ध लोप करने पर	निर्जरयोर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	निर्जरयोः
		इति सिद्धं

निर्जरसाम्, निर्जराणाम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
	निर्जर शब्द की	

अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस........इत्यादि	सूत्र से षष्ठी के बहुवचन में आम् प्रत्यय	निर्जर आम
जराया जरसन्यतरस्यां	विकल्प से जर को जरस् आदेश	निर्जरस् आम
	संयुक्त करने पर	निर्जरसाम् इति सिद्धं
	अभाव पक्ष में	निर्जर आम
ह्रस्वनद्यापो नुट्	आम् को नुट् का आगम	निर्जर नाम्
नामि	अजन्त अंग को दीर्घ	निर्जरानाम
अट्-कु-प्वाङ्-नुम्-व्यवायेऽपि	नकार को णकार करने पर	निर्जराणाम इति रूपं
	निर्जरसि, निर्जरे	
सूत्र	कार्य	स्थिति
	निर्जर शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्........इत्यादि	सूत्र से सप्तमी के एकवचन में ङि प्रत्यय अनुबन्ध लोप करने	निर्जर + इ

जराया जरसन्यतरस्याम्	विकल्प से जर को जरस् आदेश	निर्जरस् इ
	संयुक्त करने पर	निर्जरसि
		इति सिद्धं
	अभाव पक्ष में	निर्जर इ
आद्गुण	अकार-इकार को एकार गुण	निर्जरे
		इति सिद्धं

निर्जरेषु

सूत्र	कार्य	स्थिति
	निर्जर शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस --- इत्यादि	सूत्र से सप्तमी के	
	बहुवचन में सुप् प्रत्यय	निर्जरसुप्
बहुवचने झल्येत्	अनुबन्ध लोप करने पर अदन्त को एकार	निर्जर सु निर्जरेसु
आदेश प्रत्ययोः	सकार को षकार आदेश	निर्जरेषु
		इति सिद्धं

विश्वपाः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	विश्वपा शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	

सूत्र	कार्य	स्थिति
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के एकवचन में सु प्रत्यय	विश्वपा + सु
	अनुबन्धलोप करने पर	विश्वपास्
स-सजुषो रुः	स् को रु, अनुबन्धलोप करने पर	विश्वपार्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	विश्वपाः इति सिद्धि

विश्वपौ

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	विश्वपा शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ---- इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के द्विवचन में औ प्रत्यय	विश्वपा औ
प्रथमयोः पूर्वसवर्णः	पूर्वसवर्णदीर्घ प्राप्त था	
दीर्घाज्जसि	इस सूत्र से निषेध हुआ	विश्वपा औ
वृद्धिरेचि	वृद्धि करने पर	विश्वपौ इति सिद्धि

विश्वपाः

सूत्र	कार्य	स्थिति

	विश्वपा शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययःप्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्.......इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के	
	बहुवचन में जस् प्रत्यय	विश्वपा जस्
	अनुबन्ध लोप करने पर	विश्वपा अस्
प्रथमयोः पूर्वसवर्णः	~~पूर्वसवर्णदीर्घ प्राप्त था~~	
दीर्घाज्जसि च	~~इस सूत्र से निषेध हुआ~~	~~विश्वपा अस्~~
अकः सवर्णे दीर्घः	~~दीर्घ करने पर~~	विश्वपास्
ससजुषो रुः	स को रु अनुबन्ध	
	लोप करने पर	विश्वपार्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	विश्वपाः
		इति सिद्धि

विश्वपां

सूत्र	कार्य	स्थिति
	विश्वपा शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययःप्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्.....इत्यादि	सूत्र से द्वितीया के	
	एकवचन में अम्	
	प्रत्यय	विश्वपा अ[illegible]

X

अमि पूर्वः	पूर्वरूप करने पर	विश्वपां इतिसिद्धं
सूत्र	कार्य	स्थिति
	विश्वपा शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ... इत्यादि	सूत्र से द्वितीया के	
	द्विवचन औट् प्रत्यय	विश्वपा औट्
	अनुबन्ध लोप करनेपर	विश्वपा औ
प्रथमयोः पूर्वसवर्ण	पूर्वसवर्णदीर्घप्राप्त था	
दीर्घाज्जसि	से निषेध हुआ	
वृद्धिरेचि	आकार-औकार को	
	औकार वृद्धि करने पर	विश्वपौ इति सिद्ध